● जयपुर, शुक्रवार, 5 अप्रैल 24 ● वर्ष 13 ● अंक 225 ● पृष्ठ : 8 ● मूल्य : 1 रुपये
www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25
RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक
राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

चमकता राजस्थान

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● स्वामी विवेकानंद

पेज @3 किडनी रैकेट का खुलासाः कोलकाता का लगता था मेडिकल वीजा...

पेज @4 जयपुर के सरकारी हॉस्पिटल की तानाशाही के चलते मातृत्व को ....

पेज @8 गहलोत ने अपने रिश्तेदारों को 15 करोड़ की जमीन महज 3.67 करोड़ में....

भाजपा के मालवीया ने बांसवाड़ा लोकसभा सीट से भरा नामांकन

वागड़ का चहुंमुखी एवं अद्वितीय विकास हम करेंगे :- भजनलाल शर्मा

चमकता राजस्थान

बांसवाड़ा। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण के नामांकन का गुरुवार को अंतिम दिन था। बचे हुए प्रत्याशी ने नॉमिनेशन किया। इसमें भाजपा और कांग्रेस के कई बड़े नाम भी शामिल हैं। भाजपा में जहां पूर्व मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालवीया नामांकन भरा। नामांकन के बाद सभा का आयोजन हुआ जिसमें मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शामिल हुए। मालवीया की नामांकन सभा में पहुंचे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जैसे ही मैं मुख्यमंत्री बना मालवीया किसी ना किसी काम के लिए बार बार आते थे, कहते थे कि मेरे वागड़ के लिए इस काम कि आवश्यकता है। मैंने कहा कि आपके मन में वागड़ की टीस है उसी तरह मेरे मन में वागड़ के लिए टीस है। उन्होंने मेरे सामने प्रस्ताव रखा तो मैंने प्रस्ताव रखा कि मुझे आप जैसा व्यक्ति चाहिए जो वागड़ के साथियों के सपने को पूरा कर

सके। आप आइए, हम आपको लोकसभा का चुनाव लड़ाएंगे। हम आपसे वादा करते है कि जो 70 साल में नहीं हुआ वो विकास हम वागड़ में करके दिखाएंगे। मेरी बात को वो अमल में लाए। उन्होंने कहा कि मुझे लोगों कि सेवा करनी है। मैं अब तक कांग्रेस में था, पत्र लिखते लिखते मेरी अंगुली पतली हो गई। लेकिन कांग्रेस के लोगों ने कोई बात नहीं सुनी मुझे इस बात का दर्द है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं की हमने वागड़ में काम करने की ठानी है, और सरकार ने काम भी शुरू कर दिया है। केंद्र की मोदी सरकार ने दशकों पुरानी रेल की मांग को केंद्र सरकार ने पूरा किया है। हाईवे भी पूरा होने को है। मैंने कहा था कि बांसवाड़ा डूंगरपुर प्रतापगढ़ का पर्यटक सर्किट बनाएंगे। गुरुजी ने कहा था कि गुजरात से कोई आएगा और दिल्ली में डंका बजाएगा। यह तीन सो साल पहले कहा था। भगवान राम 500 साल से टेंट में थे मोदी ने ये कलंक ×खत्म कर दिया मोदी ने। इस कांग्रेस की सरकार ने गरीबी हटाने का नारा दिया लेकिन वो गरीब से उसका कोई नाता नहीं। गरीबी हटाने का काम मोदी ने किया। हमारी डबल इंजन की सरकार वागड़ का विकास करेगी। पिछले दिनों हमने कहा माही डैम में आइलैंड है। हमारी सरकार इनका विकास करेगी। यहां के औद्योगिक क्षेत्र को बढ़ाने के लिए सरकार काम करेगी।

वागड़ में पानी है जमीन भी है और वागड़ में काम करने वाले जवानों की फौज है। आपके यहां बाप के विधायक बने लेकिन कोई विधायक वागड़ के विकास के लिए नहीं आया। आपने देखा होगा गोविंद गुरु का स्मारक बनाया अभी काम बहुत बाकी है। यहां कि सोने की खान, लोग कहते थे यहां की बिड मत बनाइए। हमने कहा सबसे पहले हमारा डूंगरपुर बांसवाड़ा का विकास सबसे पहले होगा। यह वागड़ राजस्थान का सबसे मजबूत और उत्पादन वाला क्षेत्र बनेगा।

संक्षिप्त समाचार

तेलंगाना की केमिकल फैक्ट्री में रिएक्टर फटा, 5 लोगों की मौत, बढ़ सकता है मृतकों का आंकड़ा

हैदराबाद/एजेंसी। तेलंगाना के संगारेड्डी जिले में एक केमिकल फैक्ट्री में रिएक्टर फटने से पांच लोगों की मौत हो गई है। अधिकारियों ने बताया कि आठ से 10 अन्य लोग अभी भी फंसे हुए हैं, जिसका मतलब है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। स्थानीय रिपोर्टों से पता चलता है कि विस्फोट के समय इमारत में 50 लोग थे। एनडीटीवी की रिपोर्ट की मानें तो स्थानीय मीडिया ने कहा है कि चिंता है कि इमारत में अगले रिएक्टर में विस्फोट हो सकता है, इसलिए अधिकारियों ने आसपास के इलाकों से लोगों को निकालना शुरू कर दिया है। घायलों को सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस मामले में और अधिक जानकारी की प्रतीक्षा की जा रही है। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, दवा कंपनी में रिएक्टर में विस्फोट हुआ और उसके आसपास मौजूद लोग धमाके के प्रभाव के चलते दूर जा गिरेज अब तक पांच लोगों की मौत हो चुकी हैज10-15 लोग घायल हैं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने आज इस दुर्घटना की समीक्षा की है। अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को इस हादसे के बारे में जानकारी। मुख्यमंत्री कार्यालय के मुताबिक, सीएम ने अग्निशमन विभाग के अधिकारियों को तुरंत बचाव कार्य तेज कर आग पर काबू पाने का आदेश दिया।

मथुरा से भाजपा उम्मीदवार हेमा मालिनी ने भरा पर्चा

मथुरा/एजेंसी। ड्रीम गर्ल के नाम से मशहूर दो बार से भाजपा की सांसद हेमा मालिनी ने गुरुवार को मथुरा लोक सभा सीट से अपना नामांकन किया। उनके साथ यूपी सरकार के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह मौजूद रहे। भाजपा ने तीसरी बार हेमा मालिनी पर दांव लगाया है।

जिलाधिकारी ने उनका नामांकन करवाया है। यहां 26 अप्रैल को मतदान होना है और नामांकन भरने की अंतिम तिथि आज यानि गुरुवार है।

यहां सीएम योगी आदित्यनाथ भी आने वाले हैं। वो मथुरा पहुंच एक जनसभा को संबोधित करेंगे। वह दूसरी बार भाजपा प्रत्याशी हेमा मालिनी के समर्थन में चुनावी जनसभा करने आ रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी ने 27 मार्च को श्रीकृष्ण जन्मस्थान पर दर्शन कर अपने चुनावी प्रचार अभियान की शुरुआत की थी। वहीं, कांग्रेस ने मथुरा लोकसभा सीट पर मुकेश धनगर को उम्मीदवार घोषित किया है।

पीएम नरेंद्र मोदी की जमुई रैली में की नीतीश की तारीफ,चिराग पासवान पर भरोसा

आज का भारत दुनिया को दशा दिखाता हैः पीएम मोदी

जमुई/एजेंसी

पीएम नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को जमुई से बिहार में अपने चुनाव प्रचार का आगाज किया. पीएम मोदी जमुई की रैली में अपने चिर-परिचित अंदाज में दिखे और विरोधियों को खूब आड़े हाथों लिया. पीएम ने जमुई में करीब 28 मिनट का भाषण दिया. इस दौरान पीएम ने जहां विरोधियों पर जमकर निशाना साधा तो वहीं अपने सहयोगियों की भी खूब तारीफ की. मंच पर भी नीतीश कुमार के साथ उनकी बात हुई, साथ ही उन्होंने उपेंद्र कुशवाहा से भी बात की.

पीएम मोदी ने भरी सभा में चिराग पासवान के पिता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान को याद

किया साथ ही चिराग पासवान को भी पिता के सिद्धांतो और विचारों को आगे बढ़ाने के लिए सराहा. नीतीश कुमार का जिक्र करते हुए पीएम ने बिहार के विकास में उनको बराबर का हिस्सेदार बताया. जमुई में पीएम नरेंद्र मोदी की सार्वजनिक रैली में, बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने कहा कि, '''वो तो झूठ-मूठ का हम बीच में एक बार साथ कर सकते हैं', लेकिन जब मैंने देखा कि वह गलत कर रहे हैं, मैंने उन्हें (राजद) छोड़ दिया और अब हम हमेशा के लिए एक साथ हैं। 'अब कभी इधर उधर नहीं होने वाले हैं'. नीतीश कुमार ने कहा कि पीएम मोदी 10 साल से केंद्र सरकार में हैं और उन्होंने बिहार और देश के लिए बहुत काम किया है. जब से हमने सत्ता संभाली है, हिंदू-मुस्लिम दंगे बंद हो गए हैं, मैं मुस्लिम समुदाय से अपील करना चाहता हूं कि अगर आपने गलती से उन्हें (विपक्ष) वोट दिया, तो फिर से वो दंगे शुरू हो जाएंगे

पीएम ने अपने संबोधन में बगैर नाम लिए ही लालू परिवार को निशाने पर लिया और लैंड फॉर जॉब स्कैम का उल्लेख किया साथ ही ये भी कहा कि नौकरी के लिए जमीन तक लिखवा ली. पीएम ने जमुई में कहा कि 2024 का चुनाव भारत और भविष्य के लिए निर्धारक है. ये चुनाव विकसित भारत और बिहार का संकल्प है.नरेंद्र मोदी ने कहा कि बिहार कैसे बदल रहा, ये जमुई बता रहा है. जमुई राजद के जंगलराज का कितना बड़ा भुक्तभोगी होता था. यहां नक्सली हावी थे, सरकारी योजना और सड़कें भी नहीं बन पाती थी लेकिन आज वही जमुई विकास की तेज रफ्तार को पकड़ रहा है. पीएम ने कहा कि छोटे-छोटे देश पहले हम पर आतंकियों से हमला कराते थे और तब कांग्रेस दूसरे देशों के पास शिकायत लेकर जाती थी लेकिन मोदी सत्ता में आया तो कहा भारत ऐसे नहीं चलेगा, आज का भारत घर में घुसकर मारता है. उन्होंने कहा कि आज का भारत दुनिया को दशा दिखाता है. दुनिया देख रही है कि 10 साल में ही भारत की हैसियत कैसे बढ़ी है. आज हम 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनी है. भारत जब जी 20 की मीटिंग करता है तो उसकी चर्चा विश्व में होती है.

कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव वल्लभ ने पार्टी से दिया इस्तीफा, भाजपा में हुए शामिल

लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को बड़ा झटका

नई दिल्ली/एजेंसी

कांग्रेस नेता गौरव वल्लभ ने पार्टी से इस्तीफा देकर आज इखढ ज्वॉइन कर लिया है। दिल्ली इखढ मुख्यालय में पार्टी नेता विनोद तावड़े ने उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई। उनके साथ ही बिहार कांग्रेस के नेता अनिल शर्मा और आरजेडी नेता, उपेन्द्र प्रसाद भी बीजेपी में शामिल हुए। इससे पहले अपने कांग्रेस छोड़ने के फैसले पर गौरव वल्लभ ने कहा कि मैंने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को पत्र लिखकर मेरे दिल की सारी भावनाएं उसमें व्यक्त कर दीं हैं।इखढ में शामिल होने पर उन्होंने कहा, 'मैंने अपने दिल की सारी व्यथाएं, जिसके बारे में मैं कांग्रेस पार्टी को समय-समय पर कांग्रेस पार्टी को अवगत कराया, वो अपने इस्तीफे में लिखा दिया था। मेरा हमेशा मानना रहा है कि भगवान राम का मंदिर बने और न्यौता मिले और हम न्यौते को ठुकरा दें, कांग्रेस पार्टी यह लिखकर दे दे कि हम नहीं जा सकते, मैं ये नहीं स्वीकार कर सकता हूं।'

● वेल्थ क्रिएटर्स को नहीं दे सकता गाली

» गौरव वल्लभ ने कहा, 'मैं अर्थशास्त्र का विद्यार्थी हूं। बड़े समय तक देश के प्रतिष्ठित संस्थाओं में मैंने अर्थशास्त्र और वित्त पढ़ाया भी है। सुबह से शाम तक वेल्थ क्रिएटर्स को गाली, उन नीतियों को गाली, उदारीकरण, निजीकरण को गाली, वैश्विकरण को गाली..मनमोहन सिंह और नरसिम्हा राव ने जो किया उसे पूरी दुनिया मानती हैं, आप उन नीतियों को गाली दे रहे हैं। कोई बिजनेस करे उसे गाली, कोई विनिवेश करे उसे गाली, एयर इंडिया कोई खरीदे वो गलत.. मुझे लगता है मुद्दों को टैकल करने में कांग्रेस पार्टी के अंदर गैप आ रहे हैं। मैंने चिट्ठी में भी यही लिखा।'

● कौन हैं गौरव वल्लभ ?

» गौरव वल्लभ ने पिछले साल अशोक गहलोत और सचिन पायलट विवादों में भी खुलकर स्टैंड लिया था और अशोक के समर्थन में बयान दिए थे। 2023 में राजस्थान विधानसभा चुनाव में उदयपुर सीट से मैदान में वह उतरे थे। हालांकि, बीजेपी उम्मीदवार ताराचंद्र जैन ने 32,000 से ज्यादा वोटों से हरा दिया था। गौरव वल्लभ ने 2019 में झारखंड के जमशेदपुर पूर्व से पहली बार चुनाव लड़ा था। उन्होंने 18,000 से ज्यादा वोट हासिल किए थे और तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुबर दास और सरयू रॉय के बाद तीसरे स्थान पर रहे थे। इसके अलावा गौरव कई बार न्यूज चैनलों पर कांग्रेस का पक्ष रखते थे।

अमेठी में राहुल गांधी को हराने वाली स्मृति ईरानी का वायनाड में रोड शो, उमड़ी भीड़

वायनाड/एजेंसी। उत्तर प्रदेश की अमेठी लोकसभा सीट पर कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को हराने वाली स्मृति ईरानी ने गुरुवार को केरल के वायनाड लोकसक्षा क्षेत्र में भाजपा उम्मीदवार के. सुरेंद्रन के समर्थन में मेगा रोड शो किया। इससे एक दिन पहले राहुल गांधी ने इस सीट से नामांकन दाखिल किया था। 2019 के चुनाव में स्मृति ईरानी ने राहुल गांधी को अमेठी लोकसभा सीट से हराया था। कोझिकोड एयरपोर्ट पर पहुंचकर रोड शो के लिए स्मृति ईरानी हेलीकॉप्टर से वायनाड पहुंचीं।

उन्होंने विशाल सभा को भी संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने उत्तर प्रदेश में अपनी पारंपरिक सीट अमेठी के लिए काम नहीं करने के लिए गांधी परिवार की आलोचना की। उन्होंने कहा कि भाजपा के आने से अमेठी में विकास शुरू हुआ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार बहुत कुछ कर रही है। स्मृति ईरानी ने कांग्रेस और सीपीआई की भी आलोचना की, जो विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के सहयोगी हैं, लेकिन वायनाड में एक-दूसरे के खिलाफ लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह लोगों के साथ धोखा है।

जिस तरह राहुल को अमेठी से बाहर किया गया, इस बार वायनाड में भी वैसा ही होगा।" कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सीपीआई उम्मीदवार एनी राजा ने बुधवार को अपना नामांकन दाखिल किया।

2019 के चुनाव में, राहुल गांधी ने राज्य में 4.31 लाख वोटों के अंतर के साथ भारी जीत हासिल की, जबकि तत्कालीन भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए उम्मीदवार तीसरे स्थान पर रहे और मात्र 78,000 वोट हासिल करने में सफल रहे।

एक तिहाई आबादी भूखी सोती है, फिर भी भोजन की बर्बादी!

भूख से इंसान की जंग सदियों शताब्दियों वरन सहस्राब्दियों पुरानी है ज्यो ज्यो इंसानी सभ्यताओं का विकास हुआ त्यो त्यों भूख की समस्या घटने की उम्मीद बंधी लेकिन यह उम्मीद मृगतृष्णा साबित हुई। आज भी इंसान की भूख से जंग जारी है इस के बावजूद दुनिया भर में भोजन की बर्बादी थमने का नाम नहीं ले रही है वरन बढ़ रही है कुछ सालों पहले औसतन हर व्यक्ति पचास किलो भोजन एक साल में बर्बाद करता था लेकिन अब सालभर में हर व्यक्ति औसतन 79 किलो खाना बर्बाद कर देता है। दुनियाभर में सालाना 1 अरब टन से ज्यादा अनाज बर्बाद होता है– जबकि, दुनिया में अब भी करीब 80 करोड़ लोग भूखे ही सोते हैं। ये आकंड़े चौंकाते हैं और ये दिखाते हैं कि जहां एक ओर लोगों को पेट भरने लायक खाना नहीं मिल रहा है, वहां हर साल खाने की इतनी ज्यादा बर्बादी हो रही है।

बता दें कि ये सारी जानकारी संयुक्त राष्ट्र की 'फूड वेस्ट इंडेक्स रिपोर्ट 2024' में सामने आई है। इसमें 2022 के आंकड़े लिए गए हैं। इसमें बताया गया है कि 2022 में दुनियाभर में सालभर में 1.05 अरब टन अनाज बर्बाद हो गया था। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में बताया गया है कि हर साल हर भारतीय औसतन 55 किलो खाना बर्बाद कर देता है। इस हिसाब से भारतीय परिवारों में सालाना 7.81 करोड़ टन से ज्यादा अनाज बर्बाद हो जाता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत के पड़ोसी मुल्कों में खाने की सबसे बर्बादी चीन में होती है। चीन में हर व्यक्ति सालभर में औसतन 76 किलो खाना बर्बाद करता है। इस हिसाब से वहां सालभर में परिवारों में 10.86 करोड़ टन खाना बर्बाद हो जाता है। पाकिस्तान में वैसे तो हर व्यक्ति सालाना औसतन 130 किलो खाना बर्बाद करता है, लेकिन वहां सालभर में 3.07 करोड़ टन खाना बर्बाद होता है। जबकि पाकिस्तान में भूखमरी अपेक्षाकृत अधिक है इसके बावजूद सम्पन्न लोग विपुल मात्रा में खाद्य सामग्री खराब करते हैं।

हमारे दूसरे पडोसी देश बांग्लादेश में 1.41 करोड़ टन, अफगानिस्तान में 52.29 लाख टन, नेपाल में 28.31 लाख टन, श्रीलंका में 16.56 लाख टन और भूटान में 15 हजार टन से ज्यादा खाना हर साल बर्बाद हो जाता है। रिपोर्ट में बताया गया है कि खाने की बर्बादी सिर्फ अमीर या बड़े देशों तक ही सीमित नहीं है। बल्कि, छोटे और गरीब देशों में भी लगभग उतनी ही बर्बादी हो रही है। हालांकि, शहरों की तुलना में गांवों में खाने की बर्बादी कम है। उसकी एक वजह ये भी है कि शहरों की तुलना में गांवों में पालतू जानवर ज्यादा होते हैं और खाना उनमें बंट जाता है। इस कारण शहरों के मुकाबले गांवों में खाना उतना बर्बाद नहीं होता। दुनिया में19 फीसदी खाना बर्बाद किया जा रहा है। 2022 में सालभर में 1.05 अरब टन खाना बर्बाद हो गया। यानी, जितना खाना लोगों के लिए उपलब्ध था, उसमें से 19 फीसदी बर्बाद हो गया। इस हिसाब से सालभर में 1 ट्रिलियन डॉलर यानी लगभग 84 लाख करोड़ रुपये का खाना बर्बाद हो गया।

परिवारों में ज्यादा बर्बादी: खाने की सबसे ज्यादा बर्बादी परिवारों में हैं। 63.1 करोड़ टन यानी 60 फीसदी खाना परिवारों में ही बर्बाद हुआ। 29 करोड़ टन खाना फूड सर्विस सेक्टर और 13 करोड़ टन रिटेल सेक्टर में बर्बाद हुआ।

हर व्यक्ति ने 79 किलो खाना बर्बाद किया: 2022 में औसतन दुनियाभर में हर व्यक्ति ने 79 किलो खाना बर्बाद किया। अमीर देशों के मुकाबले गरीब देशों में महज 7 किलो खाने की बर्बादी कम हुई दुनिया में लगभग 80 करोड़ लोग भूखे सोने के लिए मजबूर हैं। आंकड़ों के अनुसार खाने की ये बर्बादी तब है, जब दुनियाभर में 78.3 करोड़ से ज्यादा लोग भूखे पेट सो जाते हैं। इतना ही नहीं, दुनियाभर में इंसानों की एक तिहाई आबादी पर भी खाद्य संकट मंडरा रहा है।

खाने की बर्बादी का क्लाइमेट पर असर: खाने की बर्बादी की वजह से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन 8 से 10 फीसदी तक बढ़ गया है। रिपोर्ट में सामने आया है कि जिन देशों की जलवायु गर्म है, वहां खाने की बर्बादी ठंडे देशों की तुलना में कहीं ज्यादा है।

आपको बता दें कि दुनिया भर में हर व्यक्ति सालभर में औसतन 79 किलो खाना बर्बाद कर देता है। अगर ये खाना बर्बाद न हो, तो किसी जरूरतमंद का पेट भर सकता है। हालांकि, कई देशों में खाने की बर्बादी में कमी लाने के तरीकों पर काम हो रहा है। ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, मेक्सिको और साउथ अफ्रीका सहित कुछ देशों में खाने की बर्बादी में कमी आई है। 2007 के बाद से जापान में खाने की बर्बादी में एक तिहाई की कमी आई है। जबकि, ब्रिटेन में 18 फीसदी तक कमी आ चुकी है। ग्लोबल फूडबैंकिंग नेटवर्क की सीईओ लिसा मून ने 'द गार्डियन' को बताया कि खाने की बर्बादी को कम करने के लिए फूड बैंक के साथ मिलकर काम किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि खाने की बर्बादी को कम करने के लिए फूड बैंकिंग अनूठा मॉडल है। क्योंकि फूड बैंक न सिर्फ मैनुफैक्चरर्स, किसानों, रिटेल सेलर और फूड सर्विस सेक्टर के साथ मिलकर काम करते हैं, बल्कि वो ये भी सुनिश्चित करते हैं कि ये खाना जरूरतमंद तक पहुंचे। लेकिन दुनिया भर में जागरूकता की कमी है और जो जागरूक है वह सिर्फ अपने स्तर पर खाने की बर्बादी रोकते हैं लेकिन दूसरो को इसके लिए प्रेरित करने में नाकाम रहते हैं।

इतना ही नहीं, कुछ खास अध्ययन में ये भी सामने आया है कि अगर लोगों से खाने के कचरे को अलग से इकट्ठा करने को कहा जाता है, तो उनकी आदत में सुधार आता है और वो खाने की कम बर्बादी करते हैं। क्योंकि इससे उन्हें समझ आता है कि वो जितना खरीदते या बनाते हैं, उसका कितना बड़ा हिस्सा बर्बाद हो रहा है। स्पष्ट है कि सभी लोगों को इस ओर विशेष ध्यान देने की महती जरूरत है एक इंसान सही मे इंसान तभी कहलाने का पात्र है जब उसे प्राणी मात्र की मूलभूत जरूरत का अहसास हो और भोजन तो सबसे जरूरी है यदि हमें भोजन उपलब्ध है तो हमारा फर्ज है कि हम उन लोगों का भी ख्याल करें जिनके पास भोजन उपलब्ध नहीं है और ऐसे में एलीट सम्पन्न वर्ग सबसे ज्यादा भोजन की बर्बादी कर रहा है यह इंसान की सभ्यता के विकास की यात्रा को झुठलाता है आइए हम सभी भोजन की बर्बादी को रोकने के लिए प्रयास करें।

विपक्ष बनाम सत्तारूढ़ घटक की रैली

अवधेश कुमार

31 मार्च को राजधानी दिल्ली के रामलीला मैदान में विपक्षी गठबंधन आईएनडीआईए की तथा चुनाव की घोषणा के बाद उत्तर प्रदेश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राजग की पहली रैली मेरठ में हुई। हालांकि इस बार मेरठ रैली से ज्यादा प्रचार रामलीला मैदान की थी, क्योंकि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी तथा कांग्रेस पर आयकर विभाग द्वारा 3567 करोड़ की देनदारी का नोटिस मिलने के बाद यह पहली रैली थी। निश्चित रूप से चुनावी माहौल के कारण दोनों का महत्व था और संपूर्ण देश का ध्यान दोनों की ओर था। भाजपा और राजग की दृष्टि से देखें तो यह चुनाव की सामान्य रैली मानी जाएगी। जयंत चौधरी के राष्ट्रीय लोक दल का भाजपा के साथ गठबंधन है और वो इस रैली में मौजूद रहेंगे इसे लेकर किसी को संदेह नहीं था। इसलिए रैली का आकर्षण तो था किंतु कौतूहल जैसा कुछ नहीं था। इसके समानांतर आईएनडीआईए की रैली को लेकर कौतूहल भी था तथा इसके नेताओं के लिए अभी तक का सबसे बड़ा अवसर भी माना जाएगा। कारण, विपक्ष जनता के बीच स्वयं को पीड़ित और दमित बताकर चुनाव में जा रहा है तथा उसका मूल स्वर यही है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्व वाले सरकार विपक्षी नेताओं और पार्टियों को खत्म करने के लिए सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है जो देश में लोकतंत्र को खतरा है। इसलिए इसका नाम ही लोकतंत्र बचाओ रैली दिया गया। स्वाभाविक ही राजधानी दिल्ली से देश की जनता को अपनी बात प्रभावशाली ढंग से पहुंचाने तथा उनका समर्थन हासिल करने की संभावना पैदा करने का अभी तक का सबसे बड़ा अवसर था। अगर वह अपने कार्यकर्ताओं घनघोर समर्थकों के अलावा कुछ समूह को और प्रभावित कर पाते तो चुनाव में ताकत बढ़ाने की संभावना पैदा हो सकती थी। प्रश्न है कि क्या इस दृष्टि से आईएनडीआईए की रामलीला मैदान रैली वाकई सफल मानी जा सकती है?

राजधानी दिल्ली में आम आदमी पार्टी का अभी तक ठोस जनाधार बना हुआ है। 70 में से 62 विधायक उसके हैं। इस कारण यहां अच्छी खासी संख्या अपेक्षित ही थी। इसके साथ पंजाब में भी उनकी सरकार है और हरियाणा ,राजस्थान से कांग्रेस के लोगों की उपस्थिति भी संभावित थी। अखिलेश यादव इसमें शामिल थे इसलिए पश्चिमी उत्तर प्रदेश से सपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों का भी आना निश्चित था। यह तो नहीं कहा जा सकता कि संख्या दृष्टि से रैली कमजोर थी। संख्या ठीक-ठाक थी। किंतु इतनी तैयारी के बाद राजधानी दिल्ली में जिस तरह का जैन सैलाब दिखना चाहिए था वैसा नहीं दिखा यह सच है। अरविंद केजरीवाल के गिरफ्तार होने के बाद से इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल रहा है की इतनी विधायकों और पार्षदों वाली पार्टी का प्रचंड विरोध दर्शन राजधानी में क्यों नहीं हो रहा?

आईएनडीआईए में शामिल दलों की जो स्थिति है उसमें इसके ज्यादातर नेताओं या पार्टियों का प्रतिनिधित्व

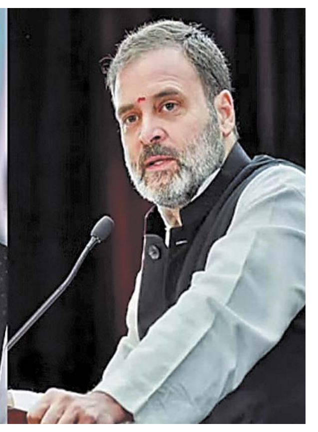

होना था और हुआ। ममता बनर्जी उपस्थित होती तो संदेश ज्यादा बेहतर जाता। नेताओं के भाषणों को देखें तो उनमें नए तत्व या पहलू तलाशना मुश्किल है। तथ्यों , तर्कों और प्रखरता के आलोक में भाषण ऐसे नहीं थे जिनमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार को लेकर लोगों के अंदर गुस्सा और विद्रोह की भावना पैदा हो। राहुल गांधी अगर 400 पर का नाम लेते हुए मैच फिक्सिग की बात कर रहे थे तो तेजस्वी यादव ने कहा कि पहले से ही ईवीएम सेट होगा तभी 400 का नारा दिया जा रहा है। यानी ये नेता अपने समर्थकों को भी यही बता रहे थे कि चुनाव आयोग से लेकर ईवीएम तक में इस प्रकार की व्यवस्था कर दी गई है कि परिणाम उनके ही पक्ष में आएगा। इसके द्वारा आईएनडीआईए के नेतागण क्या संदेश दे रहे थे? यह प्रकारांतर से चुनाव परिणाम के पूर्व ही अपनी पराजय को स्वीकार करने जैसा था। इसके अलावा ज्यादातर नेताओं का भाषण लोकतंत्र खत्म हो गया है, ईडी,सीबीआई जैसी संस्थाओं के माध्यम से विपक्ष के नेताओं पर कार्रवाई की जा रही है, उनको जेलों में डाला जा रहा है, मीडिया को दबाव में ला दिया गया है आदि पर ही टिका हुआ था। विडंबना देखिए कि लोकतंत्र के नाम पर आयोजित रैली का सबसे बड़ा फोकस अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल की उपस्थिति हो गई। जैसे ही समाचार आया कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवान सिंह मान सुनीता केजरीवाल को लेकर रामलीला मैदान पहुंच रहे हैं पूरी मीडिया का ध्यान वही केंद्रित हो गया। सुनीता केजरीवाल ने अपने भाषण में बताया कि अरविंद केजरीवाल जी ने आपके लिए छह गारंटियां दी हैं। ये गारंटिया वही हैं जो पहले से जनता को क्या मुफ्त दिया जा सकता है अरविंद केजरीवाल की ओर से अनेक बार बोला जा चुका है। महत्वपूर्ण बात यह थी कि सुनीता ने वहीं कह दिया कि हमने यह बोलने के पहले आईएनडीआईए के नेताओं से इस पर चर्चा नहीं की है, लेकिन उम्मीद है कि सभी इसका समर्थन करेंगे। यानी यहां भी अरविंद केजरीवाल ने आईएनडीआईए में स्वयं को सबसे अलग दृष्टिकोण और विचारों वाला नेता अपनी पत्नी के माध्यम से साबित करने की कोशिश की। वास्तव में विपक्ष की रैली से कोई एक रूप, एक स्वर का संदेश नहीं निकल पाया। नेता एकत्रित जरूर हुये, उनका गुस्सा भी प्रकट हुआ और किसी तरह नरेंद्र मोदी सरकार को सत्ता से हटाने की भावना भी लेकिन इसके अलावा कुछ नहीं। लोगों ने देखा है कि राष्ट्रीय स्तर पर आईएनडीआईए नमक गठबंधन नहीं है। केवल कुछ राज्यों में पार्टियों के बीच गठजोड़ है और कुछ में ये आपस में लड़ रहे हैं। जैसे पश्चिम बंगाल और केरल में इनके घटक एक दूसरे के सामने हैं। अन्य जगह भी कई प्रकार के अंतर्संघर्ष व द्वंद्व हैं। इस रैली का कोई एक ऐसा नेता नहीं था जिनका सभी एक स्वर में नाम ले और लगे कि उनके नेतृत्व में रैली से एकजुटता का स्वर निकला है। यहां तक कि रैली में सुनीता केजरीवाल शामिल होंगी इसकी जानकारी भी दूसरी पार्टी के ज्यादातर नेताओं को पहले से नहीं थी। ऐसा होता तो मंच से इसकी घोषणा की जाती। शायद आम आदमी पार्टी या फिर कई अन्य पार्टियों और नेताओं को यह उम्मीद रही होगी कि हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन तथा सुनीता को मंच पर लाकर लोगों की सहानुभूति बटोरी जा सकती है। किंतु इसका दूसरा संदेश यह भी निकल रहा था कि आखिर इन नेताओं के जेल में जाने के बाद पार्टी के दूसरे पुरुष या महिला नेता इनकी आवाज बनकर क्यों नहीं आ रहे? क्या पार्टी में भी परिवार की ही आवाज इन नेताओं का प्रतिनिधित्व करेगी? यह ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर आईएनडीआईए के लिए देना आसान नहीं रहेगा। आम आदमी पार्टी की ओर से भगवंत मान ने भी अपनी बातें रखी, पर वे वहां अरविंद केजरीवाल के प्रतिनिधि या पार्टी के भावी नेता के रूप में नहीं दिख रहे थे।

दूसरी ओर मेरठ का विश्लेषण करें तो वहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राजग के सभी घटक दलों के बीच विचार, वक्तव्य और व्यवहारों में एकरूपता स्पष्ट दिखाई दे रही थी। किसी का कोई अलग स्वर नहीं था। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में भ्रष्टाचार के विरुद्ध कार्रवाई को सही ठहराते हुए यही कहा कि यह जारी रहेगी और इसके नाम पर जो दल इकट्ठा हो रहे हैं उनके दबाव में सरकार नहीं आएगी। उन्होंने कहा कि मैं कहता हूं कि भ्रष्टाचार खत्म करेंगे और वह कहते हैं कि हम सरकार को हटाएंगे।

दूसरे, उन्होंने लोगों को बताया कि हम अगले 5 वर्षों के लिए सरकार का एजेंडा तैयार कर रहे हैं और परिणामों के बाद नई सरकार गठन होते ही 100 दिनों के कार्ययोजना पहले से तैयार कर ली गई है। इस तरह का आत्मविश्वास प्रकट कर-के जनता को बताया गया कि हम केवल देश के लिए ही सोचते हैं और जिनके स्वार्थ पर आघात पहुंचा है, जिनके भ्रष्टाचार सामने लाकर कार्रवाई हुईं हैं, वही सब हमारी या हमारी सरकार का विरोध कर रहे हैं। इसके साथ-साथ योगी आदित्यनाथ ने मोदी की गारंटी और हिंदुत्व संबंधी विचारों और कार्यों को सामने रखकर कार्यकर्ताओं तथा समर्थकों के मनोभावों को अभिव्यक्ति दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ ने जब ये बातें रखीं तो तालियों और नारों से दिखाई दे रहा था कि समूह किस तरह नेताओं के साथ जुड़ा हुआ है। इसी तरह जयंत चौधरी ने जब यह कहा कि दूसरी सरकार होती तो चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न सम्मान नहीं मिलता इसके बाद जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से इसे समर्थनदिया। इस तरह दोनों रैलियों के तुलना करके आप स्वयं उद्देश्यों की दृष्टि से उनकी सफलता और प्रभावों का आकलन कर सकते हैं।

भाजपा ने राजनीति को सेवा करने का सर्वोत्तम माध्यम बनाया

डॉ. आशीष वशिष्ठ

देश के राजनीतिक इतिहास में छह अप्रैल का दिन खास अहमियत रखता है। "अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा " भारतीय जनता पार्टी के पहले अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी ने आज ही के दिन, 1980 में यानी 44 साल पहले, पार्टी की स्थापना के समय ये शब्द कहे थे। शायद उन्होंने यह बात पार्टी के कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिए कही होगी लेकिन उस समय पार्टी कार्यकर्ताओं या फिर विपक्षी दलों में शायद ही किसी ने सोचा होगा कि आने वाले दिनों में अटल जी की बातें सही साबित होंगी। 1984 के लोकसभा चुनाव में केवल दो सीटें हासिल करने से लेकर 2019 के चुनाव में 303 सीटें जीतने वाली भाजपा ने अपने इस शानदार सफर में कई उतार-चढ़ाव भी देखे, बड़े झटके भी खाए और मायूसी भी महसूस की। धरातल पर बदलाव लाने के लिए राजनीति सबसे सशक्त माध्यम है। राजनीति के माध्यम से हम समाज के दबे-कुचले लोगों और उपेक्षित समुदायों को ऊपर उठाते हुए सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को दूर करने का भरसक प्रयास कर सकते हैं। एक व्यापक बदलाव लाने का जो कार्य, बड़े से बड़े वेतन वाली प्रतिष्ठित नौकरी करके भी नहीं किया जा सकता है, उसे राजनीति के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है। इसी सिद्धांत पर चलते हुए भाजपा ने आरंभ से ही राजनीति को सत्ता की बजाय सेवा का माध्यम माना है।

आजादी के बाद के लंबे कालखंड तक भारतीय राजनीति में परिवार और व्यक्ति केंद्रित दलों ने राजनीति को कमाई का जरिया बनाया और सेवा भाव को नदी के जलधारा में प्रवाहित कर दिया। बीच-बीच में केंद्र की सत्ता पर आसीन गैरकांग्रेसी सरकारों ने लोक कल्याण के लिए कुछ करने की सोची तो उन्हें अस्थिर कर दिया गया। 2014 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में पूर्ण बहुमत की एनडीए सरकार का गठन हुआ, तब से तस्वीर में बदलाव आया है। पिछले दस वर्षों में आम आदमी को इस बात का आभास हुआ है कि राजनीतिज्ञ अगर सेवा करने के भाव से राजनीति करें तो कितना बड़ा और व्यापक बदलाव देश और आम आदमी की जिंदगी में लाया जा सकता है। भाजपा की रीति-नीति और संकल्पों की डगर पर चलते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने यह साबित कर दिया कि राजनीति सेवा का सबसे सशक्त माध्यम है। परिवारवादी दल जो अपने परिवारजनों के विकास और उत्थान में सारी ऊर्जा खपाते हैं, वह राजनीति को सेवा का नहीं, बल्कि मेवा का माध्यम मानते हैं। उनकी डिक्शनरी में परिवार पहले और देश बाद में आता है। तीन मार्च, 2024 को बिहार की राजधानी पटना के गांधी मैदान में जन विश्वास महारैली में इंडी अलांयस की रैली में बोलते हुए राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने प्रधानमंत्री मोदी के परिवारवाद वाली टिप्पणी का जवाब देते हुए कहा था कि उनकी कोई संतान नहीं है। वो पत्नी के साथ नहीं रहते। कैसे जानेंगे कि परिवार क्या होता है? लालू प्रसाद की आपत्तिजनक टिप्पणी के अगले दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तेलंगाना के आदिलाबाद में जनसभा को संबोधित कर रहे थे तो उन्होंने विपक्ष की ओर से उनके परिवार को लेकर किए गए हमले का परोक्ष रूप से जवाब दिया। प्रधानमंत्री ने कहा, 'मैं इनके परिवारवाद पर सवाल उठाता हूं, तो इन लोगों ने अब बोलना शुरू कर दिया है कि मोदी का कोई परिवार नहीं है। मैं इनसे कहना चाहता हूं कि 140 करोड़ देशवासी मेरा परिवार हैं। जिनका कोई नहीं है, वो भी मोदी के हैं और मोदी उनका है। मेरा भारत ही मेरा परिवार है।' जो दल एक परिवार या व्यक्ति द्वारा द्वारा संचालित हो रहे हैं, उनके लिए परिवार ही सर्वोपरि है। उनकी सारी ऊर्जा परिवार के विकास और कल्याण में ही खर्च होती है। उनके एजेंडे में आम आदमी का विकास और कल्याण अंतिम पायदान पर होता है। प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा की विचारधारा ने भारतीय राजनीति की इसी विचारधारा को पलटने का काम किया है। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा के अन्य नेता कहते हैं कि हमारे लिए नेशन फर्स्ट है। विपक्ष के लिए तो फैमिली फर्स्ट इसे सारा देश अब अनुभव करने लगा है।

श्रीमद्भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को राजनीति और कूटनीति के माध्यम से राज्य, धर्म एवं समाज की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया है। धर्म के विपरीत आचरण करने वालों और सत्ता, सुख-संपदा, धन-वैभव एवं ऐश्वर्य के लिए जीने वालों को उन्होंने समस्त संसार के लिए विनाशकारी बताया है। इसलिए हमारी राजनीति के विमर्श में लोकमंगल की भावना होना बहुत आवश्यक है। राजनीति को सत्ता पाने का अवसर मानने वाली अनैतिकता ही अस्वस्थ राजनीतिक परंपरा को पोषित करती रहती है। यदि राजनीति की ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बनाया जाए और नैतिकता, मूल्यों एवं आदर्श का समावेश करते हुए सेवाभाव से कार्य किया जाए तो एक स्वस्थ, सक्षम एवं सजग समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

भाजपा के चाहे दो सांसद रहे हों या 303 भाजपा ने राजनीति को हमेशा सेवा का माध्यम माना। और ये बात उसके चरित्र और आचरण से झलकती भी है। राजनीति का चरित्र-चित्रण, उसके नेतृत्व में प्रतिबिंबित होता है। सही राजनीतिक नेतृत्व किसी भी संस्था या अभियान को जन-जन के बीच पहुंचा सकता है और उसे जनभागीदारी का प्रतीक बना सकता है। वैश्विक महामारी कोरोना के समय में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में वर्तमान भारत सरकार ने जिस प्रकार से गरीबों एवं असहायों की सहायता के लिए राजनीतिक दूरदृष्टि के साथ शासन एवं प्रशासन का कार्य किया है, वह संस्थाओं के नेतृत्व का श्रेष्ठ उदाहरण है। कोरोना के समय विपक्ष ने नकारात्मक भूमिका निभाई। देश में बनी वैक्सीन से लेकर तमाम व्यवस्थाओं का उपहास उड़ाया। देश की जनता को भ्रमित करने का काम किया। इसमें कोई दोराय नहीं है कि विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाले भारत जैसे देश में कोरोना के संकट से निपटते हुए गरीबों, मजदूरों, किसानों, शोषितों और वंचितों के हितों की रक्षा करने से लेकर देश की आर्थिक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने तक का कार्य, किसी चुनौती से कम नहीं था। लेकिन संकट के ऐसे समय में प्रधानमंत्री ने देश के सभी राजनीतिक दलों को एक साथ जोड़ने का समेकित प्रयास करते हुए देश को आत्मनिर्भर बनाने और जन-कल्याण करने के लिए सरकार की भावी प्राथमिकताओं और योजनाओं को धरातल पर उतारा है।

राजनीति का मूल उद्देश्य जनता के सामाजिक-आर्थिक कल्याण को अधिकतम करना है। यदि राजनीति का पूरी तरह से सही और सकारात्मक दिशा में प्रयोग की जाए तो विकास के नए शिखर छुए जा सकते हैं, मानवता की सेवा की जा सकती है और देश को निरंतर आगे बढ़ाया जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी साफ-सफाई जैसे छोटे से बिंदु से लेकर गरीबों को आवास की सुविधा के बारे में एक साथ सोचते हैं। उनकी सोच के दायरे में किसान, महिलाएं, युवा, दलित, आदिवासी, वंचित और देश का एक-एक नागरिक है। प्रधानमंत्री मोदी में सेवा के गुण पार्टी की रीति-नीति और विचारों की वजह से प्रभावी हैं, क्योंकि भाजपा के संस्थापकों ने सेवा भाव से ही राजनीतिक क्षेत्र में कदम बढ़ाया और अपनी आने वाली पीढ़ियों में भी सेवाभाव को कूट-कूट कर भरने का काम किया।

कहा जाता है कि व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है। प्रधानमंत्री ने देश की और देशवासियों की सेवा करने में दिन-रात एक किया। आज आदमी अपना भला-बुरा सब बहुत अच्छे से समझता है। उसे पता है कि कौन राजनीति को सेवा का माध्यम मानता है, और कौन सत्ता हासिल करके अपना पेट भरना चाहता है। इसलिए देशवासी विपक्ष के दुष्प्रचार, प्रलोभन और मायाजाल में नहीं फंसे। वर्तमान में देश में आम चुनाव का माहौल है। तीसरी बार प्रधानमंत्री मोदी चुनावी मैदान में है। देश की जनता भलीभांति यह समझ चुकी है कि उसका कल्याण और उत्थान वही व्यक्ति कर सकता है जो 140 करोड़ देशवासियों को अपना परिवार समझता है। जो बिना किसी भेदभाव और पूर्वाग्रह के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा में जुटा रहता है।

कोडाइकनाल सौर वेधशाला में सूर्य के अध्ययन के 125 वर्ष पूरे

मुकुंद

कोडाइकनाल सौर वेधशाला ने सूर्य के अध्ययन के 125 वर्ष पूरे कर लिए। इसका उत्सव (वर्षगांठ) पहली अप्रैल को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के स्वायत्त संस्थान भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान ने मनाया। इस दौरान कोडाइकनाल सौर वेधशाला के इतिहास का स्मरण किया गया। वैज्ञानिकों का अभिनंदन कर इसकी विरासत का सम्मान किया गया। कोडाइकनाल सौर वेधशाला देश में खगोल विज्ञान के लिए प्रमुख और बड़ी उपलब्धि है। इस वेधशाला में 20वीं सदी की शुरुआत से हर दिन रिकॉर्ड की जाने वाली 1.2 लाख डिजिटल सौर छवियों और सूर्य की हजारों अन्य छवियों का एक डिजिटल भंडार उपलब्ध है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष और भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान की अधिशासी परिषद के अध्यक्ष एएस किरण कुमार ने कोडाइकनाल सौर वेधशाला की 125वीं वर्षगांठ के प्रतीक चिह्न का अनावरण और एक पुस्तिका का विमोचन भी किया। इस वेधशाला की स्थापना पहली अप्रैल 1899 को अंग्रेजों ने की थी। खुशी की बात यह है कि वेधशाला के पास दुनिया में सूर्य के सबसे लंबे समय तक के निरंतर दैनिक रिकॉर्ड के अद्वितीय डेटाबेस को डिजिटल कर दिया गया है। यह डेटाबेस अब दुनिया भर के खगोलविदों के लिए सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। कोडाइकनाल सौर वेधशाला वर्तमान में भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान के अंतर्गत फील्ड स्टेशन के रूप में कार्यरत है। यह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का स्वायत्त संस्थान है।

उत्सव में भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान की निदेशक प्रो. अन्नपूर्णी सुब्रमण्यम ने वेधशाला की विरासत पर चर्चा की। संस्थान के पूर्व निदेशक और सौर भौतिक विज्ञानी प्रो. सिराज हसन ने वर्ष 1909 में वेधशाला में गैस के रेडियल प्रवाह के कारण सनस्पॉट में देखे गए एवरशेड प्रभाव की खोज की जानकारी दी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अंतरिक्ष विज्ञान कार्यक्रम कार्यालय की पूर्व निदेशक एस. सीता ने रेखांकित किया कि विद्यार्थियों के बीच इसकी विशिष्टता के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए विद्यालयों और महाविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों में कोडाइकनाल सौर वेधशाला पर सामग्री होनी चाहिए।

एएस किरण कुमार ने इस अवसर पर "भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम" पर चर्चा की। सफल चंद्रयान-3 मिशन के लिए दूर की गई तकनीकी चुनौतियों और गगनयान के साथ भविष्य पर प्रकाश डालते हुए रिमोट सेंसिंग, मैपिंग और संचार के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि यह आयोजन इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कोडाइकनाल सौर वेधशाला में वैज्ञानिक भारतीय धरती से सूर्य को समझने, ग्रहणों का अध्ययन करने, वर्ष 1868 में हीलियम की खोज करने, सूर्य में प्लाज्मा प्रक्रिया को समझने और इसके विस्तार, प्रमुखता और चमक-दमक को समझने का प्रमाण है।

कोडाइकनाल सौर वेधशाला तमिलनाडु में पश्चिमी घाट के ऊंचे देवदार के पेड़ों के बीच स्थित है। यह एक हिल स्टेशन भी है। कोडाइकनाल में कॉफी, यूकेलिप्टस और चॉकलेट की खुशबू आती है। यह दुनिया की हलचल से दूर पलानी पहाड़ियों में बसा हुआ है और इसे 'जंगल का उपहार' कहा जाता है। इसकी सुंदर और घुमावदार सड़कें इलाके के भू-भाग और भू-विज्ञान की प्रतिक्रिया हैं। यहां की कोडाई झील ऊंची पहाड़ियों से तारे की तरह टिमटिमाती है। कोडाइकनाल के मुख्य शहर से चार किलोमीटर दूर यह वेधशाला 2343 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इससे पहले यह गतिविधियां मद्रास वेधशाला से संचालित होती थीं। मद्रास वेधशाला को वर्ष 1786 में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी विलियम पेट्री ने शुरू किया था। प्रोफेसर चार्ल्स मिक्सी स्मिथ ने कोडाइकनाल सौर वेधशाला की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सौर विज्ञानी कहते हैं कि आने वाले समय में हमारे अपने अस्तित्व के लिए सूर्य के भविष्य को समझना महत्वपूर्ण है । इस अर्थ में, पिछली शताब्दी में किए गए सूर्य के अवलोकन हमें अतीत में झांकने की अनुमति देते हैं । ये ऐतिहासिक अवलोकन हमें अपने निकटतम तारे के पहले चरण में उसके व्यवहार को समझने में सक्षम कर सकते हैं और उसके आधार पर ही हम उसके भविष्य की भविष्यवाणी कर सकते हैं। सूर्य की नियति को समझने से अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए हमारी योजनाओं को आकार मिलेगा, क्योंकि सूर्य हमारे अंतरिक्ष मौसम की स्थिति के लिए चालक है।

और भी वेधशाला हैं देश में: मध्य प्रदेश के उज्जैन ने भी खगोल विज्ञान के क्षेत्र में काफी महत्व का स्थान प्राप्त किया है। सूर्य सिद्धान्त और पंच सिद्धान्त जैसे महान ग्रंथ उज्जैन में लिखे गए हैं। भारतीय खगोलविदों के अनुसार, कर्क रेखा को उज्जैन से गुजरना चाहिए, यह हिंदू भूगोलवेत्ताओं के देशांतर का पहला मध्याह्न काल भी है। लगभग चौथी शताब्दी ई.पू. उज्जैन ने भारत के ग्रीनविच होने की प्रतिष्ठा का आनंद लिया। यहां वेधशाला का निर्माण जयपुर के महाराजा सवाई राजा जयसिंह ने 1719 में किया था। तब वे दिल्ली के राजा मोहम्मद शाह के शासनकाल में मालवा के राज्यपाल के रूप में उज्जैन में थे। राजा जयसिंह असाधारण रूप से एक विद्वान थे। उन्होंने उस समय फारसी और अरबी भाषाओं में उपलब्ध एस्टर-गणित पर पुस्तकों का अध्ययन किया। उन्होंने खुद खगोल विज्ञान पर किताबें लिखीं। राजा जयसिंह ने के अलावा जयपुर, दिल्ली, मथुरा और वाराणसी में वेधशालाओं का निर्माण कराया। राजा जयसिंह ने अपने कौशल को नियोजित करने वाली इन वेधशालाओं में नए यंत्र स्थापित किए। उन्होंने उज्जैन में आठ वर्षों तक स्वयं ग्रहों की गतिविधियों का अवलोकन करके कई मुख्य खगोल-गणितीय उपकरणों में परिवर्तन किया।

(लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।)

किडनी रैकेट का खुलासा: कोलकाता का लगता था मेडिकल वीजा

जयपुर के फोर्टिस अस्पताल में होता था ट्रांसप्लांट

चमकता राजस्थान

जयपुर। जयपुर के फोर्टिस हॉस्पिटल में किडनी ट्रांसप्लांट के खुलासे के बाद मेडिकल इंड्रस्ट्री में हड़कंप है। गुरुग्राम सिटी का नाम लेकर बांग्लादेश के मरीजों को जाल में फंसाया जाता था। उन्हें सेक्टर-39 के आलीशान गेस्ट हाउस में ठहराकर सारी मेडिकल सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती थीं। मरीज को पहले गुरुग्राम के नामी फ़ोर्टिस अस्पताल का हवाला देकर बरगलाया जाता था। बाद में फ़ोर्टिस अस्पताल की जयपुर ब्रांच में उनका किडनी ट्रांसप्लांट कराया जाता था। किडनी डोनर शमीम ने बताया कि वह बांग्लादेश में मोबाइल की दुकान चलाता है। फेसबुक पर किडनी प्रत्यारोपण का विज्ञापन देखकर उसने रांची निवासी मोहम्मद मुर्तजा अंसारी नामक एजेंट से संपर्क किया था।

बांग्लादेश के रहने वाले मेहंदी मजूमदार ने बताया कि उनके कई जानकार मो. मुर्तजा अंसारी के माध्यम से हिन्दुस्तान में किडनी ट्रांसप्लांट करा चुके हैं। एक अधिकारी ने बताया कि 10 से 20 लाख रुपये के बीच में ट्रांसप्लांट कराने वालों से लिया जाता था। दलाल के माध्यम से ही किडनी देने वालों का चयन किया जाता था। जिन्हें मामूली रकम देकर तैयार किया जाता था। उनका ब्लड ग्रुप व अन्य जांच होने के बाद ही मेडिकल वीजा के माध्यम से हिन्दुस्तान लाया जाता था। अभी तक यह बात सामने आई है कि जिन लोगों ने अपनी किडनी दी है, उन्हें कोलकाता के मेडिकल वीजा पर भारत लाया जाता था। मामले की जांच के लिए एक टीम को जयपुर के लिए फोर्टिस अस्पताल भेजा जा रहा है।

● पहले भी पकड़ा जा चुका है किडनी रैकेट

» किडनी रैकेट का गुरुग्राम में यह कोई पहला मामला नहीं है। साल 2008 में भी इसी तरह का एक मामला पालम विहार क्षेत्र में सामने आया था। जहां उत्तर प्रदेश से लोगों को लाकर उनकी किडनी निकाली जाती थी।

● जयपुर के सभी प्राइवेट हॉस्पिटल रडार पर

» एसएमएस अस्पताल से फ़ज़ी एनओसी जारी करने के मामले में फोर्टिस अस्पताल के कोर्डिनेटर विनोद सिंह की गिरफ़्तारी के बाद एसीबी ने दो फाइन सर्च किया था ट्रांसप्लांट से जुड़ी तीस फ़ाइल ज़ब्त की थी एसीबी फोर्टिस और ई एच सी सी अस्पताल से फ़ाइले ज़ब्त कर चुकी है हालाँकि कार्रवाई केवल निजी अस्पतालों के कॉर्डिनेटर तक ही पहुँच पाई है जबकि एसीबी ने एसएमएस अस्पताल के सहायक प्रशासनिक अधिकारी गौरव का ऑफ़सि सील किया था,ऐसे में अंग प्रत्यारोपण सौदे से जुड़े प्रदेश के सभी अधिकृत निजी अस्पताल जाँच के दायरे में आ गए हैं!

● अंगों के दलाल गौरव ,अनिल और विनोद आठ तक रिमांड पर

» अंगों के दलाल गौरव सिंह ई एच सी सी के अनिल जोशी और फोर्टिस अस्पताल के विनोद सिंह को गुरुवार को कोर्ट में पेश किया गया जहाँ से सभी आरोपियों को 8 अप्रैल तक रिमांड पर भेज दिया गया एसीबी आरोपियों से अलग अलग पूछताछ कर रही है एसीबी अस्पतालों से ज़ब्त की गई फाइलों की जाँच करने में जुटी है!

श्रीनगर भाजपा प्रत्याशी भागीरथ चौधरी का फूलों से भव्य स्वागत

चमकता राजस्थान

श्रीनगर (रघुनंदन पारीक) श्रीनगर अजमेर लोकसभा भाजपा प्रत्याशी भागीरथ चौधरी श्रीनगर पंचायत समिति का दौरा किया श्रीनगर पंचायत समिति की गांव फारक्या जिलावड़ा ,कानपुरा तिहारी लोहरवाड़ा सनोद रामसर ,नादला, न्यारा, भटियाणी ,बिठूर हाउसिंग बोर्ड राजोसी भवानी खेड़ा मावशीया देराटू , लवेरा, सभी जगहों पर अभिनन्दन हुआ सभी ग्राम वासीयो ने समस्या ओ से अवगत कराया चौधरी ने प्रशासन को जल्द निस्तारण के आदेश दिए। श्रीनगर में पहुचने पर कार्यकर्ताओं ने जोर शोर से स्वागत किया जगह जगह लाडू व गुड़ से तोला गया ,श्रीनगर सरपंच संघअध्यक्ष दिलीप राठी ने कार्यकर्ताओं के साथ 80 कीलो गुड से तोला व पूर्व सरपंच व देहात उपाध्यक्ष भाजपा ओबीसी मोर्चा रामकरण यादव ने रामलीला मच पर 80 कीलो लड्डू से भाजपा लोक सभा प्रत्यासी भागीरथ चौधरी को तोला नसीराबाद विधायक ने26 तारीक को भाजपा को भारी मतों से जिताने की अपील की श्रीनगर से जुड़ी समस्याओं का तुरन्त निस्तारण का आश्वासन दिया। पूर्व सांसद पुत्र तिलक रावत ,भागचंद चौधरी किसान मोर्चा सुनिता यादव देहात उपाधक्ष महिला मोर्चा माणक कुमावत ,जगदीश शर्मा , विष्णु प्रक- ाश शर्मा , महावीर मेघवंशी मंडल उपाध्यक्ष,श्रीनगर मंडल अध्यक्ष के के जोशी मंडल महामंत्री राजू सिंह रावत, राजू यादव , हरि ओम यादव भाजपा वरिष्ठ जिला सरपच संघअध्यक्ष खातोली सरपंच सहित कहीं ग्रामीण रहे मोजूद।

संक्षिप्त समाचार

सब-जूनियर बालिका राष्ट्रीय कबड्डी स्पर्धा में राजस्थान टीम ने जीता रजत

चमकता राजस्थान। जयपुर। 33वीं सब-जूनियर बालिका राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में राजस्थान बालिका वर्ग के खिलाड़ियों ने रजत पदक जीता है। राजस्थान स्टेट कबड्डी संघ के अध्यक्ष तेजस्वी सिंह ने बताया कि राजस्थान बालिका टीम ने शुरुआत मध्य प्रदेश के साथ किया। जिसका स्कोर 63/29 रहा, राजस्थान बालिका टीम में सभी लीग मैचों में विजय हासिल की और राजस्थान कबड्डी टीम ने क्वार्टर मैच साई के साथ खेला जिसमें राजस्थान ने 33/16 और दूस-रा क्वार्टर फाइनल मैच छत्तीसगढ़ के साथ खेला, जिसमें राजस्थान में छत्तीसगढ़ को 49/15 से हराया था। सेमी फाइनल उत्तराखंड के साथ खेला इसमें 52/33 का स्कोर रहा और फाइनल हरियाणा के साथ खेला जिसका स्कोर 33/35 रहा। गहलोत ने बताया कि राजस्थान पुरुष वर्ग कबड्डी खिलाड़ियों ने 48वीं जूनियर राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता था और 49वीं जूनियर राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में राजस्थान को रजत पदक जीता और अब 33वीं सब जूनियर बालिका राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में बालिकाओं ने रजत पदक जीतकर राज्य का नाम रोशन किया है।

पत्रकारों का होली स्नेह मिलन कार्यक्रम

चमकता राजस्थान। श्रीनगर (रघुनन्दन पारीक) श्रीनगर झड़वासा गुरुवार को बासक बाबा धाम (नाड़ा) पर उपासक रणजीत महाराज के सानिध्य व किशनअवतार, एडवोकेट हेमंत प्रजापत की अध्यक्षता व नसीराबाद तहसीलदार महेश शेषमा व सदर सीआई के मुख्य आतिथ्य में होली स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया इस अवसर पर धाम पर उपासक रणजीत महाराज ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया तथा तहसीदार महेश शेषमा व सीआई ने अपने सयुंक्त सम्बोधन मे बताया की प्रेस, पुलिस व प्रशासन की लोकतंत्र को मजबूत बनाने मे बड़ी अहम भूमिका होती है इसी के मध्यजर हम सभी पूरी कोशिश करें की आने वाले लोकसभा चुनाव 2024 मे लोकतंत्र की मजबूती के लिए ज्यादा से ज्यादा लोग मतदान करें इसके लिए सभी को जागरूक भी करना है साथ ही कानूनी व्यवस्था को बनाये रखना है इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार किशनअवतार व हेमंत प्रजापत ने भी होने सम्बोधन मे सभी पत्रकारों को बधाई देते हुए बताया की पत्रकारों की समाज मे बहुत ही बड़ा किरदार होता है जिसको हर पत्रकार ईमानदारी से निभाता है इस अवसर सभी पत्रकारों को गुलाल तिलक लगाकर फूलों से होली खेली गईं साथ साफा वंदन के साथ सभी का सम्मान किया गयासाथ ही वीर तेजाजी व बासक बाबा धाम (नाड़ा) समिति के रजिस्ट्रेशन का विमोचन भी किया गया जिस समिति मे अध्यक्ष सुभाष सोनी, सचिव पिंकी, कोषाध्यक्ष जितेश अग्रवाल, और सदस्य रणजीत महाराज, राकेश पापड़िया, कालू व प्रदीप जाट, नबदु मेहरा, कालू सैनी, हरीश रावत, देबी लाल व गोपाल सैनी को नियुक्त किया गयाइस मौके पर पत्रकार मुकेश वैष्णव, पूरनमल उदय, जितेंद्र सिंह राठौड़,अमित चौकड़ीवाल, रवि चावला, पीयूष जिंदल, भगवान वैष्णव, विजय पारासर, विजय, घनश्याम दास, रामावतार जांगिड़, जितेंद्र उदय, हेमराज मेघवंशी,कमलेश उदय, नील, बालकिशन शर्मा, दिलीप सेन, श्याम सांखला, आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालक राजेश वर्मा ने किया

संभागीय आयुक्त के निर्देश पर टीमों ने किया राजकीय कार्यालयों का औचक निरीक्षण

चमकता राजस्थान

● राजकीय कार्यालयों में एक साथ निरीक्षण के लिए पहुंची गठित टीमें

● कार्मिकों की उपस्थिति सहित अन्य व्यवस्थाओं एवं इंतजामों का लिया जायजा

जयपुर, (खलील कुरैशी) 04 अप्रैल। राजकीय कार्यालयों में गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी एवं अधिकारियों-कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए संभागीय आयुक्त डॉ. आरूषी मलिक के निर्देश पर गठित जांच दलों ने गुरुवार, 04 अप्रैल 2024 जयपुर स्थित राजकीय कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान सहायक अभियंता कार्यालय खण्ड प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ में कई अनियमितताएं सामने आईं। कार्यालय में नियोजित 19 में 10 कर्मचारी बिना किसी स्वीकृत अवकाश के अनुपस्थित पाए गए। निरीक्षण की सूचना के बाद कई कार्मिक कार्यालय पहुंचे। वहीं, कार्यालय अधिशाषी अभियंता, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के निरीक्षण के दौरान 34 में से 9 कार्मिक अनुपस्थित पाए गए। अनुपस्थित कार्मिकों का आकस्मिक अवकाश स्वीकृत पाया गया।

एक जांच दल ने गांधी नगर स्थित शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का औचक निरीक्षण किया। केन्द्र पर जांच दल को सभी इंतजाम दुरुस्त मिले। सभी चिकित्सा अधिकारी एवं चिकित्साकर्मी उपस्थित मिले साथ ही साफ सफाई एवं दवाओं की उपलब्धता सहित सभी जरूरी इंतजाम सुनिश्चित पाए गए।

वहीं, संभागीय आयुक्त के निर्देशों की अनुपालना में गठित टीम द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के गांधी नगर जयपुर स्थित राजकीय कन्या छात्रावासों का निरीक्षण किया गया। राजकीय सावित्री बाई फुले कन्या छात्रावास (अनुसूचित जनजाति, महाविद्यालय स्तर) एवं राजकीय सावित्री बाई फुले कन्या छात्रावास, गांधीनगर जयपुर में व्यवस्थाएं संतोषजनक पायी गई। छात्रावास की बालिकाओं को नाश्ता, भोजन एवं अन्य सुविधाएं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के निर्धारित मापदंड के अनुसार दिया जाना पाया गया।

5 अप्रैल से शुरू होगा होम वोटिंग का प्रथम चरण,1 हजार 185 मतदाता करेंगे घर से वोट

चमकता राजस्थान। धौलपुर(रामदास तरुण) की प्रमुख रिपोर्ट धौलपुर, 4 अप्रैल। लोकसभा आम चुनाव 2024 के तहत होम वोटिंग 5 अप्रैल से शुरू होगी। जिला निर्वाचन अधिकारी निधि बी टी ने बताया कि होम वोटिंग के लिए समस्त तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। जिले में 1 हजार 185 पात्र 85 वर्ष से अधिक के वरिष्ठ और दिव्यांग मतदाता घर बैठे ही अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। उन्होंने बताया कि होम वोटिंग का प्रथम चरण 5 अप्रैल से प्रारम्भ होकर अलग-अलग विधानसभा वार 13 अप्रैल तक चलेगा। घर-घर जाकर मतदान करवाने के लिए रूट चार्ट बनाकर तैयार कर लिया गया है। सेक्टर अधिकारियों और राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में संपूर्ण प्रक्रिया संपादित करवाई जाएगी। इस प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने के लिए वीडियोग्राफी भी करवाई जाएगी। बसेड़ी विधानसभा क्षेत्र से 346, बाड़ी विधानसभा क्षेत्र से 339, धौलपुर विधानसभा क्षेत्र से 229 तथा राजाखेड़ा विधानसभा क्षेत्र से 271 मतदाता होम वोटिंग सुविधा का उपयोग करेंगे। प्रथम विजिट में यदि कोई होम वोटिंग का मतदाता घर पर नहीं मिलता है तो उनके लिए 15 व 16 अप्रैल को द्वितीय विजिट कर उनका मतदान करवाने का प्रयास किया जाएगा।

महिलाओं ने दशा माता की पूजा अर्चना करके गांव में खुशहाली की कामना मांगी,

चमकता राजस्थान। श्रीनगर (रघुनंदन पारीक) श्रीनगर क्षेत्र पिपली ईश्वर महादेव के प्रांगण में श्रीनगर क्षेत्र की महिलाओं ने पीला धागा बांध कर दशा माता की पूजा अर्चना की ,संतोष देवी पारीक ने इस बारें विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि बरसों से चल आ रही परंपरा के अनुसार ग्रामीण महिलाओं द्वारा सामूहिक पूजा अनुष्ठान करके गांव की खूशहाली और विकास के लिए हमेशा से निर्बाध रूप से दशा माता की पूजा की जाती हैं और महिलाओं को दशा माता की कहानी सुनाई जाती है।

दशमी तिथि को महिलाओं ने व्रत रखकर की पूजा अर्चना

चमकता राजस्थान। चौमहला!(रमेश मोदी) होली के बाद दसवें दिन दशा माता का व्रत एवं पूजन पौराणिक काल से ही चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि को किया जाता है ,इस व्रत को महिलाएं अपने घर परिवार की दशा व दिशा यानी परिस्थितियां अनुकूल बनाने के लिए करती है ,दशा माता यानी माँ भगवती की पूजा व व्रत करके गले मे दशा माता का डोरा बाधती है ,ताकि परिवार में सुख ,शांति और समृद्धि बनी रहे ।दशा माता को कुमकम ,मेहदी ,काजल की दस दस बिंदिया लगाकर भोग के रूप नैवेद्य में लापसी ,चावल आदि चढ़ाया जाता है ,फिर वनस्पति देव पीपल के वृक्ष पर कच्चे सूत को लपेटते हुवे शोभाग्य व मंगल की कामना करते हुवे परिक्रमा करती है ,इस दिन महिलाएं व्रत रख कर एक समय भोजन करती है इस दिन महिलाएं सुबह स्नान आदि कर चुनरी ओढ़कर सोलह श्रृंगार कर वनस्पति देव पीपल के व्रक्ष की पूजा करने निकलती है ,जंहा पूजा के बाद विद्वान ब्राह्मण देवता से नल दमयंती की कथा श्रवण कर उनको उचित दक्षिणा देकर उनका आशीर्वाद लेकर आती है ।

राजकीय कार्यालयों में एक साथ निरीक्षण के लिए पहुंची गठित टीमें

संभागीय आयुक्त के निर्देश पर टीमों ने किया राजकीय कार्यालयों का औचक निरीक्षण

कार्मिकों की उपस्थिति सहित अन्य व्यवस्थाओं एवं इंतजामों का लिया जायजा

चमकता राजस्थान

जयपुर, (खलील कुरैशी) 04 अप्रैल। राजकीय कार्यालयों में गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी एवं अधिकारियों-कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए संभागीय आयुक्त डॉ. आरूषी मलिक के निर्देश पर गठित जांच दलों ने गुरुवार, 04 अप्रैल 2024 जयपुर स्थित राजकीय कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान सहायक

अभियंता कार्यालय खण्ड प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ में कई अनियमितताएं सामने आईं। कार्यालय में नियोजित 19 में 10 कर्मचारी बिना किसी स्वीकृत अवकाश के अनुपस्थित पाए गए। निरीक्षण की सूचना के बाद कई कार्मिक कार्यालय पहुंचे। वहीं, कार्यालय अधिशाषी अभियंता, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के निरीक्षण के दौरान 34 में से 9 कार्मिक अनुपस्थित पाए गए। अनुपस्थित कार्मिकों का आकस्मिक अवकाश स्वीकृत पाया गया।

एक जांच दल ने गांधी नगर स्थित शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का औचक निरीक्षण किया। केन्द्र पर जांच दल को सभी इंतजाम दुरुस्त मिले। सभी चिकित्सा अधिकारी एवं चिकित्साकर्मी उपस्थित मिले साथ ही साफ सफाई एवं दवाओं की उपलब्धता सहित सभी जरूरी इंतजाम सुनिश्चित पाए गए।

वहीं, संभागीय आयुक्त के निर्देशों की अनुपालना में गठित टीम द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के गांधी नगर जयपुर स्थित राजकीय कन्या छात्रावासों का निरीक्षण किया गया। राजकीय सावित्री बाई फुले कन्या छात्रावास (अनुसूचित जनजाति, महाविद्यालय स्तर) एवं राजकीय सावित्री बाई फुले कन्या छात्रावास, गांधीनगर जयपुर में व्यवस्थाएं संतोषजनक पायी गई। छात्रावास की बालिकाओं को नाश्ता, भोजन एवं अन्य सुविधाएं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के निर्धारित मापदंड के अनुसार दिया जाना पाया गया।

अस्पताल के गेट पर डिलीवरी, गर्भवती महिला को कांवटिया हॉस्पिटल ने भर्ती करने से किया मना और एंबुलेंस भी नहीं हो सकी उपलब्ध

जयपुर के सरकारी हॉस्पिटल की तानाशाही के चलते मातृत्व को शर्मसार करने वाली घटना हुई दृष्टिगत

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) जयपुर राजधानी जयपुर के कांवटिया हॉस्पिटल में बुधवार को एक शर्मसार करने वाली घटना हुई। हॉस्पिटल प्रशासन ने गर्भवती महिला को एडमिट नहीं किया। उसे जनाना हॉस्पिटल रेफर कर दिया। हॉस्पिटल में खड़ी एंबुलेंस से मदद मांगी तो ड्राइवर ने जाने से इनकार कर दिया। कोई हॉस्पिटल स्टाफ मदद के लिए आगे नहीं आया। इतने में महिला ने हॉस्पिटल गेट पर ही बच्ची को जन्म दे दिया। मामला बढ़ता देख हॉस्पिटल प्रशासन चेता और महिला को वार्ड में ले गया।

जानकारी के अनुसार, अशोक वर्मा अपनी पत्नी नीलम को प्रसव पीड़ा (लेबर पेन) होने पर बुधवार शाम करीब 6 बजे शास्त्री नगर स्थित कांवटिया हॉस्पिटल लेकर पहुंचे। यहां डॉक्टरों ने नीलम को देखा और उसे जनाना हॉस्पिटल रेफर कर दिया। उसे प्रसव पीड़ा होने पर परिवार वालों ने कांवटिया हॉस्पिटल में ही भर्ती करने की गुजारिश की। डॉक्टरों और स्टाफ ने इससे साफ इनकार कर दिया। इस दौरान परिवार वालों और हॉस्पिटल स्टाफ में बहस भी हो गई। आरोप है कि इसके बाद वहां के स्टाफ ने गर्भवती नीलम और उसके परिवार वालों को वहां से चले जाने को कह दिया। इस दौरान हॉस्पिटल प्रशासन ने महिला फोन तो एंबुलेंस उपलब्ध करवाई और न ही किसी अन्य तरह की सहायता दी। इस मामले को लेकर गुरुवार सुबह पूर्व मंत्री और कांग्रेस के लोकसभा उम्मीदवार प्रताप सिंह खाचरियावास कांवटिया अस्पताल के दौरा था। इसकी सूचना मिलने पर कांग्रेस और भाजपा के कार्यकर्ता हॉस्पिटल के बाहर पहुंच गए। बीजेपी कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस नेताओं पर देरी से आने और राजनीति करने का आरोप लगाया। इस पर 2 कार्यकर्ताओं में धक्का- मुक्की हो गई और दोनों ने एक-दूसरे से गाली-गलौज की। हालाकि इस विवाद की जानकारी मिलने पर खाचरियावास ने कांवटिया अस्पताल का दौरा निरस्त कर दिया।

- **हॉस्पिटल के बाहर चबूतरे पर डिलीवरी हुई परिजनों ने किया हंगामा तो चेता हॉस्पिटल प्रशासन**

» परिजन गर्भवती महिला को लेकर हॉस्पिटल से बाहर निकले तभी उसको तेज प्रसव पीड़ा होने लगी। परिवार की महिलाओं ने उसे कांवटिया हॉस्पिटल के बाहर चबूतरे पर लेटा दिया। यहीं पर नीलम ने बच्ची को जन्म दिया। इस पूरी घटना के बाद परिजनों ने हंगामा किया। असपास के लोग इकट्ठे हो गए। हंगामा बढ़ता देख हॉस्पिटल प्रशासन और स्टाफ मौके पर पहुंचा और जच्चा–बच्चा को लेकर हॉस्पिटल में भर्ती किया।

- **विधायक गोपाल शर्मा पहुंचे हॉस्पिटल**

» घटना की सूचना मिलने के बाद देर रात करीब 10 बजे सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा हॉस्पिटल पहुंचे। उन्होंने हॉस्पिटल अधीक्षक राजेन्द्र तंवर से मुलाकात की। उन्हें इस तरह की घटना पर फटकार लगाई। शर्मा ने भर्ती महिला का हाल–चाल जाना और उनके परिजनों को आश्वस्त किया कि उन्हें इलाज में किसी तरह की परेशानी नहीं होने दी जाएगी। दूसरी ओर, मेडिकल डिपार्टमेंट की एसीएस शुभ्रा सिंह ने मौके पर अधिकारियों की टीम को भेजकर मामले को दिखाने और उसकी जांच करवाने के निर्देश दिए।

- **हॉस्पिटल में है डिलीवरी की व्यवस्था फिर हॉस्पिटल भी हॉस्पिटल प्रशासन ने आखिर क्यों दिखाई लापरवाही?**

» कांवटिया हॉस्पिटल में गर्भवती महिलाओं के प्रसव की व्यवस्था है। इसके लिए यहां ऑपरेशन थिएटर के साथ पर्याप्त संसाधन, डॉक्टर्स और नर्सिंग स्टाफ मौजूद है। इसके बावजूद महिला को भर्ती न करके रेफर करने की प्रक्रिया ने हॉस्पिटल प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर दिए।

संक्षिप्त समाचार

बीजेपी प्रत्याशी बिरला के भाई ने भी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन दाखिल किया

- **गुंजल ने लगाया आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप**

चमकता राजस्थान। कोटा। कोटा-बूंदी लोकसभा सीट पर बीजेपी उम्मीदवार ओम बिरला के भाई हरि कृष्ण बिरला ने भी गुरुवार को अपना नामांकन दाखिल किया है। उन्होंने निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर यह नामांकन भरा है। हरिकृष्ण बिरला ने पिछले लोकसभा चुनाव के साथ विधानसभा चुनाव के समय भी इसी तरह नॉमिनेशन फाइल किया था। हालांकि बाद में नाम वापस ले लिए गए थे। अपनी चुनावी रणनीति के तहत बिरला ऐसा करते हैं।हरिकृष्ण बिरला लगातार चुनावी प्रचार अभियान में लगे हुए हैं और भाई ओम बिरला के समर्थन में अपील कर रहे हैं। दो दिन पहले हरिकृष्ण बिरला ने कांग्रेस प्रत्याशी प्रहलाद गुंजल पर जमकर निशाना साधा था। इधर, कांग्रेस प्रत्याशी गुंजल ने आरोप लगाया कि गुरुवार को नामांकन दाखिल करते समय आचार संहिता का उल्लंघन किया गया। गुंजल ने बयान जारी किया कि कल बुधवार को कोटा-बूंदी लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याक्षी ओम बिरला ने नामांकन फार्म जमा करते समय आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किया था, मगर सरकारी प्रशासन और चुनाव आयोग मूक दर्शक बनके देखता रहा था। उसी तर्ज पर आज भी उनके बाद उनके बड़े भाई हरिकृष्ण बिरला ने भी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन भरा और कार्यालय में करीब बारह लोगों के साथ अंदर पहुंचे। उन्होंने आरोप लगाया कि निर्वाचन कार्यालय में आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन हुआ। चुनाव आयोग और प्रशासन मूक दर्शक बनके भाजपा प्रत्याशी और उनके परिवार को समर्थन कर रहा है।

लोकसभा चुनाव-2024

5 अप्रैल से शुरू होगा चुनाव कार्य में नियुक्त पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए डाक मतपत्रों से मतदान

- **जयपुर जिले के विभिन्न स्थानों पर स्थापित होंगे सुविधा केन्द्र**
- **- प्रातः 8 बजे से सायं 6 बजे तक डाक मतपत्र से होगा मतदान**

चमकता राजस्थान। जयपुर!(खलील कुरैशी) 04 अप्रैल। लोकसभा आम चुनाव की ड्यूटी में नियोजित पुलिस अधिकारियों एवं पुलिसकर्मियों द्वारा डाक मतपत्र से मतदान करने हेतु के लिए विभिन्न स्थानों पर सुविधा केन्द्र स्थापित किये गए हैं। इन केन्द्रों पर 5 अप्रैल से 10 अप्रैल 2024 तक विभिन्न दिवसों पर प्रातः 8 बजे से सायं 6 बजे तक मतदान किया जा सकेगा। 5 अप्रैल एवं 6 अप्रैल 2024 को आरएसी के अधिकारियों एवं कार्मिकों के लिए एवं अन्य दिवसों पर पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों को डाक मतपत्र से मताधिकार के प्रयोग की सुविधा मिलेगी।उप जिला निर्वाचन अधिकारी नीलिमा तक्षक ने बताया कि पुलिस अधिकारियों एवं पुलिसकर्मियों द्वारा डाक मतपत्र से मतदान सुनिश्चित करने हेतु सुविधा केन्द्रों में 36 मतदान बूथ स्थापित किये गए हैं। नेहरू नगर पानीपेच स्थित पुलिस अकादमी में 2, चांदपोल स्थित रिजर्व पुलिस लाइन में 11, लालकोठी स्थित पुलिस मुख्यालय में 4, एमआई रोड स्थित होमगार्ड ट्रेनिंग सेंटर में 3, यातायात पुलिस यादगार में 2, घाटगेट स्थित पुलिस दूरसंचार में 2, जलमहल स्थित रिजर्व पुलिस लाइन ग्रामीण में 2, शासन सचिवालय में एक, बनीपार्क स्थित राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक स्कूल में 4, घाटगेट स्थित 5वीं आरएसी बटालियन में 3 एवं चैनपुरा स्थित 14वीं आरएसी बटालियन में 2 मतदान बूथ स्थापित किये गए हैं। उन्होंने बताया कि जिन सुविधा केन्द्रों पर मात्र दिनांक 08 अप्रैल 2024 को ही सुविधा केन्द्र स्थापित किया गया है आवश्यकता होने पर आगामी दिवस में एक दिवस में सुविधा केन्द्र का विस्तार करते हुए अंतिम रूप से मतदान कराया जा सकता है।

निगम हैरिटेज की ओर से जलमहल की पाल पर आयोजित हुआ सफाई श्रमदान कार्यक्रम

चमकता राजस्थान

जयपुर, (खलील कुरैशी) 4 अप्रैल। स्वच्छ सर्वेक्षण-2024 के तहत जयपुर शहर में स्वच्छता की श्रेणी को मध्येनजर रखते हुये नगर निगम जयपुर हैरिटेज की ओर से गुरूवार को जलमहल की पाल पर सफाई श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया व भेलू मित्र मण्डल, सीफार एनजीओ, विधार्थियों व निगम के अधिकारियों कर्मचारियों ने लगभग 150 किलो कचरा निकाला।इस कार्य में बोट्स की मदद ली गई।जिसमें हैरिटेज निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा सहित निगम के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों ने जलमहल की पाल पर साफ-सफाई व श्रमदान कर आमजन को शहर को स्वच्छ बनाने हेतु प्रेरित किया।आयुक्त अभिषेक सुराणा ने बताया की स्वच्छ सर्वेक्षण-2024 के तहत आई ई सी एक्टीविटी के कम्पोनेंट के रूप में यह कार्यक्रम आयोजित करवाया जा रहा हैं। जिसमे जल स्त्रोतों के महत्व व जल संरक्षण में जन भागीदारी को बढाने पर जोर दिया जायेगा। यह कार्यक्रम दिन भर चला व गैराज से जेसीबी, लोडर, गोबलर, डम्पर ट्रेक्टर आदि तैनात रहे। कार्यक्रम में अतिरिक्त आयुक्त सुश्री रौनक बैरागी, उपायुक्त करतार सिंह, संयुक्त निदेशक जन सम्पर्क मोतीलाल वर्मा,मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सोनिया अग्रवाल, जिला परियोजना अधिकारी अमित शर्मा, राजस्व अधिकारी पार्वती सोनी, अधिशाषी अभियंता मुकेश कुमार, एनजीओ, सीफार व पीआईयूई संस्थाओं सहित निगम के अन्य अधिकारीगण एवं सफाई कर्मचारी मौजूद थें।5 अप्रेल को श्रमदान का यह कार्यक्रम तालकटोरा झील पर प्रातः 8 बजे होगा।

- **भेलू मित्र मण्डल, सीफार एनजीओ, विधार्थियों, निगम के अधिकारियों कर्मचारियों सहित लगभग200 लोगों ने भागीदारी की लगभग 150 किलो कचरा निकाला**
- **जल स्त्रोतों के महत्व व जल संरक्षण में जन भागीदारी को बढ़ाना है लक्ष्य**
- **आयुक्त सहित निगम के अधिकारीगण व कर्मचारी रहे मौजूद**
- **जल स्त्रोतों के संरक्षण व स्वच्छता का कार्यक्रम 5 अप्रैल को तालकटोरा झील पर प्रातः8 बजे**

ट्रेनी एसआई बोले- एसओजी ने हमें पट्टों से पीटा

- **कोर्ट ने हर 24 घंटे में मेडिकल कराने के आदेश दिए, चार दिन की रिमांड पर भेजा**

चमकता राजस्थान। जयपुर। (खलील कुरैशी) एसआई भर्ती परीक्षा 2021 में नकल कर पास करने वाले 11 ट्रेनी एसआई और एक कॉन्स्टेबल को आज जयपुर एसओजी में कोर्ट में पेश किया गया। चार एसआई ने कोर्ट में कहा कि एसओजी टीम ने हमें पट्टों से पीटा। इस पर कोर्ट ने एसओजी ऑफिस ले जाने से पहले सभी एसआई का मेडिकल करवाने को कहा और सभी आरोपियों को 4 दिन की रिमांड पर भेज दिया। एसओजी ने 12 दिन का रिमांड मांगा था। इसके अलावा कोर्ट ने सभी आरोपियों का हर 24 घंटे में मेडिकल कराने के आदेश दिए। सभी एसआई पर अलग-अलग आरोप हैं। इनमें पेपर लीक और डमी कैंडिडेट बिठाने के भी आरोप हैं। एसओजी ने मामले की पूछताछ और पैसों के लेनदेन की पूरी जानकारी जुटाने के लिए रिमांड की मांग की थी। वहीं, आरोपियों की तरफ से वकीलों ने एसओजी पर 24 घंटे के अंदर पेश न करने, हिरासत में बुरा व्यवहार करने के आरोप लगाए। चार ट्रेनी एसआई ने कोर्ट में कहा- एसओजी ने ऑफिस लाने के साथ ही हमें मारना शुरू कर दिया था। हमारे साथ गाली गलौज की गई। हमें पट्टों से पीटा गया। आरोपियों के वकील ने यह दलील भी दी कि इनसे जो पूछताछ करनी है, वह कुछ घंटो में हो सकती है। कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद आरोपियों को 4 दिन की रिमांड पर भेज दिया। बता दें कि एसओजी की टीम मंगलवार को सुबह करीब 9.30 राजस्थान पुलिस एकेडमी पहुंची थी। यहां तीन घंटे तक आरोपियों से पूछताछ की थी। इसके बाद 15 ट्रेनी एसआई को डिटेन कर एसओजी मुख्यालय लाया गया था। इसमें 2 महिला और 13 पुरुष सब इंस्पेक्टर शामिल थे। यहां पूछताछ के बाद बुधवार को 11 ट्रेनी एसआई को गिरफ्तार कर लिया गया था।

पूर्व सीएम की भावुक अपील- वैभव अब आपके हवाले है

जालोर में गुरुवार को कांग्रेस प्रत्याशी वैभव गहलोत ने नामांकन दाखिल किया, की जनसभा उमड़ा जनसमूह

कहा- मेरी पत्नी किसी सभा में नहीं जाती, बेटे के लिए जालोर आई है, देश एवं संविधान की रक्षा के लिए कांग्रेस को वोट दे

चमकता राजस्थान

जालोर। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गुवार को जालोर में मंच से भावुक अपील की। जालोर सिरोही से कांग्रेस प्रत्याशी बे-टे बैधव के लिए उन्हेंने जनता से समर्थन की अपील करते हुए कहा- मेरी पनी आज तक कभी भी और कहीं भी चुनावी सभा में नहीं जाती। पहली बार बेटे के लिए जालोर में चुनावी सभा में आई है। अब हम दोनों वैभव गहलोत को आपके सुपूर्द कर रहे हैं। अब आप के ऊपर है, अप उसके कैसे कामयाब करते हो। जालोर में गुरुवार को काग्रेस प्रत्याशी वैभव गहलोत ने नामांकन दाखिल किया। इस दौरान हुई जनसभा को संबोधित करते हुए पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने कहा कि देश की स्थिति खतरनाक है। यह वोट सिर्फ वैभव के लिए नहीं, बल्कि अंबेडकर का संविधान बचाने के लिये भी है। जालोर सिरोही लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी वैभव गहलोत ने गुरुवार दोपहर 12 बजे अपना नामांकन जिला निर्वाचन अधिकारी पूजा पार्थ के समक्ष प्रस्तुत किया।

- **प्रेस कॉन्फ्रेंस में डोटासरा बोले- शिक्षा मंत्री को सद्बुद्धि मिले**

इस दौरान उनके ताथ भीनगाल विधायक रागरनीत सिंह, पूर्व मंत्री सुखराम विश्नोई, रानीवाड़ा विधायक रतन देवासी, कांग्रेस जिला अध्यक्ष भंवरलाल मेघवाल सहित कई अन्य पदाधिकारी रहे। इसके बाद जालोर के आहोर रोड पर स्थित शाह पूंजाजी गेनाजी स्टेडियम में बुधवार को जनसभा का आयोजन किया गया। जहां पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, राजस्थान विधानसभा नेत प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, महित कई नेताओं ने जनसभा को संजोधित किया। पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने इस मौके पर कहा- राजीव गांधी की हत्या हो गई, वे देश में शांति के अग्रदूत थे

जनसभा से पहले कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने प्रेस वार्ता की। उन्होंने कहा- शिक्षा मंत्री को भगवान सदबुद्धि दे। शिक्षा मंत्री होकर शिक्षा को छोड़कर बाकी सारी बातें करते हैं कल भो उनका एक बयान आया। जो कांग्रेस को वोट देगा वह राम का हत्यारा होगा। क्या किसी को ऐसी बात करनी चाहिए ? वे इस बात पर असहमत हैं। चुनाव आयोग कहां है कुंभकर्णी नींद सोया हुआ है। डोटासरा ने कहा- कल जनसभा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा यहां भाषण देकर गए हैं, उन्होंने कहा कि नर्मदा का पानी लाएंगे। याद रखना मैं तो वापस आ जाऊंगा, लेकिन भजनलाल मुख्यमंत्री के पद पर रहें या नहीं रहे। लेकिन एमएलए तो रहेंगे ही रहेंगे। हम तो चाहते हैं कि भजनलाल मुख्यमंत्री रहें और मदन दिलावर ही शिक्षा मंत्री रहे ताकि जेल जाने का हमारा नम्बर जल्दी आ जाए।

अब मोदी गांधी परिवार के पीछे पड़े हुए हैं। मोदी से पूछो इंदिरा गाधी व नेहरू को याद करते हो, जिन्होंने आजादी के बाद ने देश का ढांचा खड़ा कर दिया। इतनी तो परंपरा निभानी चाहिए, कोई व्यक्तिगत दुश्मनी है क्या। जालोर-सिरोही के भविष्य के लिए आपको वोट करना है। सांचौर को जिला बनाने पर गहलोत बोले- जिला बनाना कितना बड़ा काम है। लेकिन मैंने बिना मांगे ही जिला दे दिया। जैसे रात को सो कर सपना देखा कि सांचौर जिला बन गया। सुबह उठे ते सांचौर जिला बन गया था।

संक्षिप्त समाचार

कांग्रेस प्रत्याशी चौधरी के समर्थन में पुष्कर विधानसभा क्षेत्र में संवाद कार्यक्रम आयोजित

चमकता राजस्थान। पुष्कर! पुष्कर विधानसभा के ब्लॉक कांग्रेस कमेटी, पुष्कर व ब्लॉक कांग्रेस कमेटी रुपनगढ की और नगर काँग्रेस कमेटी पुष्कर की एक बैठक पुष्कर में आयोजित की गई ।इस बैठक में कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी रामचन्द्र चौधरी, पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस कमेटी की उपाध्यक्ष एवं विधानसभा प्रत्याशी नसीम अख्तर इंसाफ व देहात जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह राठौड़,पूर्व विधायक रामनारायण गुर्जर, पुष्कर विधानसभा प्रभारी रामलाल शर्मा, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता हाजी इंसाफ अली ,दामोदर शर्मा,छीतरमल टेपण ने कार्यकर्ताओं को लोकसभा चुनाव को लेकर संवाद किया और चुनाव को लेकर दिशा निर्देश दिए ।संवाद कार्यक्रम मे वक्ताओं ने एक स्वर में उपस्थित कार्यकर्ताओं को यही सन्देश दिया कि सभी एकजुट होकर चुनाव में काँग्रेस पार्टी को जीताने हेतु जुटने का आव्हान किया।

इस अवसर पर पुष्कर नगर कांग्रेस अध्यक्ष भागचंद गंगवाल, पुष्कर ब्लॉक अध्यक्ष संजय जोशी, रूपनगढ़ ब्लॉक अध्यक्ष जीवन भाकर,टीकम शर्मा, गोपाल चौधरी,शरद वैष्णव, गोपाल तिलानिया, बैद्यनाथ पाराशर,जगदीश कुर्डिया,सावित्री प्रसाद गौत्तम,,बेनिगोपाल मंत्री, भागचंद दग्दी,प्रमोद पाराशर, मधुसूदन पाराशर,रामकरण गुर्जर, राजुमल्लिक, गिरिश पाराशर, फूलचंद पाराशर सुरेश नाथ, भागचंद आदाली, पुष्कर नारायण आदाली, खेताराम नवल, प्रेमप्रकाश बाकोलिया,संजय दग्दी, सिद्दू डोळ्या, आलोक भारद्वाज, सलाम भाई, सोनु नागौरा,रूपनगढ़ ब्लॉक कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश मुंड,उपाधायक्स लाल चंद घेना,चतर्भुज माली,हरी जाखड़,रामचंद्र मुंड,मुख्तियार मिर्जा,मोहन माली, योगेश शर्मा, बटुक पाराशर,पूर्व व वर्तमान जिला परिषद सदस्य, पूर्व व वर्तमान पंचायत समिति सदस्य,एवं सरपंचगण,अपनी टीम के साथ लोकतंत्र को बचाने के लिए अपनी भागीदारी और उपस्थिति सुनिश्चित की।

बाड़मेर लोकसभा सीट से निर्दलीय प्रत्याशी रविंद्र सिंह भाटी ने किया नॉमिनेशन, मुकाबला हुआ त्रिकोणीय

- आदर्श स्टेडियम में सभा के बाद निकाली रैली, ऊंट लेकर शामिल हुए समर्थक

चमकता राजस्थान। बाड़मेर। (खलील कुरैशी) लोकसभा चुनाव के दूसरे फेज में नॉमिनेशन के अंतिम दिन निर्दलीय विधायक रविंद्र सिंह भाटी ने बाड़मेर सीट पर निर्दलीय नामांकन दाखिल किया। 30 मार्च को दो फार्म पहले जमा करवाए थे। नामांकन दाखिल करने के बाद रविंद्र सिंह भाटी आदर्श स्टेडियम सभा पहुंचे। वहां पर लोगों ने कंधे पर उठाकर मंच तक ले गए। भाषण के बाद वहां से रैली आदर्श स्टेडियम से रवाना हुई। नेहरू नगर पुलिया होते हुए अहिसां सर्किल, किसान छात्रावास होते हुए विवेकानंद सर्किल पहुंची। वहां रैली का समापन हुआ ।भाटी ने एक दिन पहले उन्होंने बुधवार की शाम को शहर में डोर-टू-डोर जाकर पीले चावल बांटे। इधर, बीजेपी प्रत्याशी कैलाश चौधरी और कांग्रेस प्रत्याशी उम्मेदाराम बेनीवाल ने नामांकन दाखिल कर दिया है। दोनों प्रत्याशी फील्ड में ताकत झोंक रहे है।

दरअसल, बाड़मेर-जैसलमेर सीट निर्दलीय विधायक रविंद्र सिंह भाटी के चुनाव लड़ने से मुकाबला रोचक हो गया है। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि लोकसभा चुनाव 2014 से जैसा त्रिकोणीय मुकाबला देखने को मिल सकता है। उस समय बीजेपी ने कांग्रेस से सोनाराम चौधरी को शामिल कर टिकट दी। इससे पूर्व विदेश मंत्री नाराज होकर लोकसभा का चुनाव निर्दलीय लड़ा और कांग्रेस से हरीश चौधरी मैदान में थे ।नामांकन सभा के बाद ऊंट व पैदल निकले रैली में रविंद्र सिंह भाटी की नामांकन सभा आदर्श स्टेडियम में आयोजित हुई। इसमें हजारों की संख्या में भीड़ पहुंची। जनसभा के बाद वहां से रैली निकालकर लोग रवाना हुए। इस दौरान ऊंट भी शामिल हुए। रैली आदर्श स्टेडियम से नेहरू नगर पुलिया, आदर्श स्टेडियम, किसान छात्रावास होते हुए विवेकानंद सर्किल पहुंची। इस दौरान भाटी ने वहां पर खड़े लोगों का हाथ हिलाकर अभिनंदन किया।

भरतपुर लोकसभा से कांग्रेस प्रत्याशी संजना जाटव ने करी सचिन पायलट से शिष्टाचार मुलाकात

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी) भरतपुर से कांग्रेस की लोकसभा प्रत्याशी संजना जाटव ने गुरूवार को जयपुर स्थित निवास पर पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट से शिष्टाचार मुलाकात की लोकसभा चुनाव 2024 में भरतपुर लोकसभा सीट कांग्रेस की चुनावी रणनीति और मार्गदर्शन के संबंध में मुखर रूप से संवाद किया। इस दौरान उन्होंने पायलट का गुलदस्ता देकर स्वागत किया।

इतिहास में पहली ऐसी कार्रवाई, ट्रेनिंग के दौरान 29 सब-इंस्पेक्टर हुए गिरफ्तार : चतुर्वेदी

पेपर लीक के खिलाफ एक्शन में भाजपा की भजनलाल सरकार ने युवाओं का बढ़ाया आत्मविश्वास

एक ओर नारी शक्ति का अपमान करने वाली कांग्रेस, दूसरी ओर 33 प्रतिशत आरक्षण वाला नारी शक्ति वंदन अधिनियम लाने वाली भाजपा : राखी राठौड़

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)। भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर आरोप लगाते हुए कहा कि गहलोत सरकार के 2008-13 के कालखंड में विभिन्न घोटाले हुए थे। भाजपा लगातार उस कालखंड में गहलोत सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाती रही थी। जिस प्रकार वर्ष 2012 में तत्कालीन सीएम गहलोत ने चौहान बंधुओं को लाईम स्टोन की खाने अवैधानिक ढंग से आवंटित कर एक हजार करोड़ का घोटाला किया था। उसी तरह इस बार भी उन्होने अपने रिश्तेदारों को बिना नीलामी के कीमती जमीन सस्ती दरों पर दिलाकर उपकृत किया है। जोधपुर विकास प्राधिकरण ने गहलोत के दबाव में 15 करोड़ की जमीन महज 3.67 लाख में उनके रिस्तेदारों को दे दी। इस नियम विरूद्ध बेचान के खिलाफ नगरीय विकास विभाग में जांच विचाराधीन है। पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि पूर्ववर्ती गहलोत सरकार के समय रीट से लेकर एसआई भर्ती परीक्षा सहित कुल 19 परीक्षाओं के पेपर लीक हुए और लाखों युवाओं के सपनों पर पानी फिर गया। गहलोत सरकार में पेपर लीक की इतनी घटनाएं होने के बावजूद पेपर माफियाओं के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। प्रदेश में भाजपा की भजनलाल सरकार बनने के बाद लगातार पेपर माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई जारी है, अभी तक 64 लोगों की गिरफ्तारी की गई है और इतिहास में पहली बार ऐसी कार्रवाई हुई है जब ट्रेनिंग करने वाले 29 सब-इंस्पेक्टरों को गिरफ्तार किया गया है। वहीं भाजपा सरकार आने के बाद 11 भर्ती परीक्षाएं हुई जो कि पूरी तरह पारदर्शी ढंग से हुई। भाजपा सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरों टोलरेंस की नीति पर काम कर रही है।

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता राखी राठौड़ ने प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस के नेताओं की नारी शक्ति के प्रति किस प्रकार की मानसिकता है, वह लगातार उनके बयानों से नजर आती है। पहले राहुल गांधी ने शक्ति का अपमान किया और अब रणदीप सुरजेवाला ने महिलाओं के खिलाफ आपत्तिजनक बयान दिया है। इससे पहले कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत्र ने भाजपा की लोकसभा प्रत्याशी कंगना राणौत के खिलाफ बेहद घटिया बयान दिया था। जो प्रियंका गांधी कहती थी कि लड़की हूं लड़ सकती हूं उनकी पार्टी के नेताओं के बयान सुनकर तोनहीं लगता कि वो महिलाओं के हितों के लिए लड़ेंगी। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता राखी राठौड़ ने कहा कि दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं जो लगातार महिलाओं के उत्थान को लेकर प्रयासरत हैं ।नारी शक्ति वंदन अधिनियम बनाकर महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण, शौचालय, उज्वला योजना, लखपति दीदी योजना, ड्रोन दीदी योजना और ₹बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं₹ जैसी मुहिम चलाई। आज देश में सेक्स रेसो की बात करें तो 1000 पुरूषों पर 1030 महिलाएं हैं जो कि मोदी सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ मुहिम का ही परिणाम है।

मोदी की गारंटी पर आमजन को विश्वास भारी बहुमत से देश में तीसरी बार बनने जा रही भाजपा के डबल इंजन की सरकार : डॉ. कैलाश वर्मा

भाजपा लोकसभा प्रत्याशी मंजू शर्मा ने बगरू विधानसभा शहरी क्षेत्र में किया जनसम्पर्क

चमकता राजस्थान

जयपुर/ बगरु (खलील कुरैशी)। लोकसभा क्षेत्र जयपुर शहर से भाजपा प्रत्याशी मंजू शर्मा ने गुरुवार को बगरू विधानसभा के शहरी क्षेत्र प्रतापनगर एवं जगतपुरा में जनसंपर्क अभियान के दौरान नागरिकों व कार्यकर्ताओं के साथ विभिन्न बैठकों में सम्मिलित होकर भारतीय जनता पार्टी को विजय बनाने का आह्वान किया। इस दौरान बगरू विधायक डॉ. कैलाश वर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि बगरू विधानसभा के प्रत्येक बूथ पर कमल खिलाने का संकल्प सभी कार्यकर्ताओं ने ले लिया है एवं मेरा बूथ सबसे मजबूत की भावना से काम कर रहे हैं जिससे निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक विजय होगी।

- **मोदी की गारंटी पर विश्वास पुनः केंद्र में बनेगी डबल इंजन की सरकारः-डॉ.कैलाश वर्मा**

» डॉ वर्मा ने कहा कि लोकसभा चुनाव को लेकर क्षेत्र में उत्साह है एवं नागरिकों को मोदी की गारंटी पर विश्वास है जिससे भारतीय जनता पार्टी की केंद्र में पूर्ण बहुमत से सरकार बनने जा रही है। विधायक वर्मा ने यह भी कहा कि लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को जीता कर जनता पुनः डबल इंजन की सरकार बनाएगी। जिससे प्रदेश की प्रगति एवं उन्नति दोगुनी गति सें हो सकेगी। जनसंपर्क के दौरान मंडल अध्यक्ष, बूथ अध्यक्ष व कार्यकारिणी सदस्य, पार्टी पदाधिकारी, जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ कार्यकर्ता, मातृशक्ति, नागरिक बंधु एवं भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पूर्व कुलपति प्रो.अमेरिका सिंह नें विधिवत रूप से संभाला निम्स विश्वविद्यालय के सलाहकार का पदभार

- **ग्लोबल स्टैण्डर्ड के साथ निम्स देश की उच्च शिक्षा का उत्कृष्टता केंद्र बनने की ओर अग्रसर- प्रो. अमेरिका सिंह, सलाहकार**

चमकता राजस्थान। जयपुर। (खलील कुरैशी) निम्स विश्वविद्यालय के नवनियुक्त सलाहकार प्रो. अमेरिका सिंह ने आज कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर रजिस्ट्रार डॉ. संदीप त्रिपाठी एवं विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा उनका स्वागत किया गया और शुभकामनाए प्रदान की गई। नवनियुक्त सलाहकार प्रो. सिंह ने सभी कर्मचरियों से भेंटवार्ता कर परिचय प्राप्त किया। इस अवसर पर निम्स के विद्यार्थियों को रोजगार में समुचित अवसर प्रदान करने एवं नियोजन के लिए एमएस प्लेसमेंट के साथ एक समझौते ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए। प्रो. सिंह का स्वागत करते हुए डॉ पंकज सिंह निदेशक निम्स हॉस्पिटल ने कहा कि वरिष्ठ शिक्षाविद एवं पूर्व कुलपति प्रो. सिंह के लंबे अकादमिक अनुभवों से निम्स अवशय ही लाभान्वित होगा। आपके कुशल नेतृत्व और सफल मार्गदर्शन में निम्स विश्वविद्यालय देश और पदेश में पगति के नए आयाम स्थापित करेगा।

सलाहकर प्रो. सिंह ने अपनी संकल्पना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय की बुनियादी शर्तों संस्थागत उत्कृष्टता, वैश्विक मानदंडों के महत्त्वपूर्ण पहलुओं और ऐतिहासिकता को समेटे हुए निम्स विश्वविद्यालय ने वैश्विक स्तर पर ख्याति प्राप्त की हैं। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा एवं अकादमिक नवाचार को अपनी प्राथमिक कार्ययोजना में शामिल करते हुए विश्वविद्यालय वैश्विक मंच पर आने वाले समय में दस्तक देगा। विश्वविद्यालय के सलाहकार होने के नाते उनकी विश्वविद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी उनकी हमेशा प्राथमिकता रहेगी कि उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के बदलते स्वरूप को अपनाते हुए विश्वविद्यालय में श्रेष्ठ नवीनतम तकनीक, नवाचार, लाभदायक अकादमिक योजनाओं, शैक्षणिक अनुसंधान के माध्यम से विश्वविद्यालय को विकसित किया जाए। प्रो. सिंह के पदभार ग्रहण के अवसर पर डॉ. पंकज सिंह निदेशक निम्स मेडिकल कॉलेज, प्रो. यशी सोनी प्रो वीसी, डॉ. संदीप त्रिपाठी रजिस्ट्रार, प्रो. बीआर मीणा, प्रो. आशीष माथुर डॉ. दुष्यंत सिंह, डॉ. जोधा, डॉ. एमके सोनी, डॉ. आरके सैन, प्रो. राजीव सक्सेना, प्रो. प्रमोद शर्मा, प्रो. विजयवाल चौधरी, प्रो.अजित सहारण, प्रो. अनुपमा पांडे, प्रो. दीपिका, डॉ अभिषेक वैष्णव, डॉ. जाह्नवी नंदन, डॉ. हेमंत बैराठ, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. एमके सुनील, गोविंद उपाध्याय आदि उपस्थित थे।

जालौर जिले में थाना सायला पुलिस की कार्रवाई

सोशल मीडिया पर जातीय अराजकता एवं वर्ग विद्वेष फैलाने का आरोपी गिरफ्तार

चमकता राजस्थान

जयपुर/जालौर!(खलील कुरैशी) 4 अप्रैल। जालौर पुलिस द्वारा में सामान्य सड़क दुर्घटना को दलित आदिवासी की हत्या करने का मिथ्या आरोप लगा वर्ग विशेष में वैमनस्यता व घृणा की भावना उत्पन्न करने के आरोप में पुलिस ने बुधवार को आरोपी गोपाराम उर्फ गोपाल परमार पुत्र भुबा राम निवासी सनवाड़ा थाना अनादरा जिला सिरोही को गिरफ्तार किया गया है ।एसपी ज्ञान चन्द्र यादव ने बताया कि 24 मार्च को सुराणा में स्टेट हाईवे क्रॉस करते समय अज्ञात वाहन की टक्कर से घायल परसराम भील पुत्र पदमाराम भील (27) निवासी सुराणा की इलाज के दौरान मौत हो गई। इस घटनाक्रम को लेकर गोपाराम उर्फ गोपाल परमार द्वारा सोशल मीडिया पर हत्या का मिथ्या आरोप लगा क्षेत्र में जातीय वर्ग विशेष में वैमनस्यता व घृणा की भावना उत्पन्न की। जिससे क्षेत्र की विभिन्न जातियों में आपसी सौहार्द पर प्रतिकूल प्रभाव व लोक शांति में विघ्न उत्पन्न हुआ।

आरोपी ने सामान्य दुर्घटना के घटनाक्रम को दलित आदिवासी की हत्या का आरोप लगाकर लोगों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में थाना सायला का घेराव करने का कह थाना क्षेत्र की विभिन्न जातियों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न की। इस पर आईपीसी व आईटी एक्ट में मुकदमा दर्ज किया गया ।मामले की गंभीरता को देख अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामेश्वर लाल व सीओ गौतम जैन के सुपरविजन एवं एसएचओ रामेश्वर भाटी के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा बुधवार को आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। एसपी ने आमजन से अपील भी की है कि सोशल मीडिया पर ऐसे भ्रामक पोस्ट या मैसेज नहीं भेजें जिससे जातीय अराजकता या वर्ग विद्वेष उत्पन्न हो। ऐसी पोस्टों व भेजने वालों पर जिला पुलिस लगातार निगरानी रख रही है।

लोकसभा आम चुनाव- 2024:

सोशल मीडिया पर हो राउंड द क्लॉक मॉनिटरिग- मुख्य निर्वाचन अधिकारी

चमकता राजस्थान

- **फेक न्यूज एवं भ्रामक जानकारी फैलाने वालों के खिलाफ पुलिस कर रही सख्त कार्रवाई- पुलिस महानिरीक्षक**
- **अब तक 7 भ्रामक एवं विवादास्पद पोस्ट हटाए, 1 गिरफ्तार**

जयपुर!(खलील कुरैशी) 4 अप्रैल। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने कहा कि प्रदेश में स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया सुनिश्चित करने के क्रम में निर्वाचन विभाग की ओर से सोशल मीडिया पर राउंड द क्लाॅक मॉनिटरिंग रखी जाए। श्री गुप्ता ने गुरुवार को जयपुर में वीडियो कॉन्फ्रेंस से प्रदेश के सभी जिलों के जिला पुलिस अधीक्षक तथा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के जिला अधिकारियों (पीआरओ) एवं जयपुर और जोधपुर के पुलिस उपायुक्तों की वीडियो कांफ्रेंसिंग (वीसी) में अब तक की प्रगति की समीक्षा की।

पुलिस मुख्यालय से राजस्थान पुलिस के महानिरीक्षक, पुलिस, एससीआरबी शरत कविराज ने कहा कि लोकसभा चुनावों के मद्देनजर सोशल मीडिया पर प्रभावी निगरानी रखी जा रही है, साथ ही सोशल मीडिया पर फेक न्यूज एवं भ्रामक जानकारी फैलाने वालों के खिलाफ पुलिस द्वारा एक्शन भी लिया जा रहा है। श्री कविराज ने बताया कि राज्य स्तरीय मीडिया मॉनिटरिंग कमेटी की अनुशंसा पर अब तक 7 भ्रामक एवं विवादास्पद पोस्ट हटाए गए हैं। कविराज ने बताया कि बालोतरा में सोशल मीडिया पर फेक न्यूज एवं भ्रामक जानकारी फैलाने वाले 1 व्यक्ति को गिरफ्तार भी किया गया है।

वीसी के दौरान कविराज ने जिलों के अधिकारियों से कहा कि सोशल मीडिया पर चुनावों से सम्बंधित किसी भी प्रकार की ऐसी असामान्य पोस्ट जो भारत निर्वाचन आयोग और निर्वाचन विभाग, राजस्थान द्वारा जारी गाइडलाइन के उल्लंघन कर रही हो, उसका त्वरित संज्ञान लेते हुए निर्धारित प्रक्रिया के तहत सम्बंधित स्तर पर रिपोर्ट करे, जिससे उस पर एक्शन लिया जा सके। उन्होंने कहा कि लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के उम्मीदवारों के ऑफिशियल हैंडल्स के अलावा इंफ्लएंसर्स के सोशल मीडिया अकाऊंटस पर विशेष नजर रखीं जाए, वहीं कमेंट्स को भी बराबर वॉच किया जाए ।भारत निर्वाचन आयोग की ओर से चुनाव से सम्बंधित प्रचार-प्रसार कार्यो में बच्चों और जानवरों के उपयोग को पूरी तरह निषेध किया गया है। अगर किसी भी जिले में इस गाइडलाइन का उल्लंघन हो तो ऐसे प्रकरणों की भी तत्काल रिपोर्ट दी जाए।

वीसी से जुड़े जिलों के पुलिस अधिकारियों तथा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के अधिकारियों ने बताया कि उनके यहां वाट्सएप ग्रुप, हैल्पलाइन नम्बर, पुलिस मित्र, सुरक्षा सखी, बीट अधिकारी, शांति समिति, सीएलजी, साइबर सैल, बीट अधिकारी, आसूचना अधिकारी और ग्राम रक्षकों जैसे समूहों के साथ समन्वय से सोशल मीडिया की मॉनिटरिंग की जा रही है। वहीं जिला निर्वाचन अधिकारियों के निर्देशन में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के जिला अधिकारी भी अपने कार्यालयों में गठित समितियों के माध्यम से सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स पर निगाह रख रहे है। पुलिस विभाग के अधिकारियों और जिला पीआरओ द्वारा आपसी समन्वय से सूचनाओं का आदान प्रदान किया जा रहा है।

जयपुर विकास प्राधिकरण ने नवीन अवैध कॉलोनियों पर चलाया पीला पंजा

बाईस बीघा भूमि पर पॉच अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 04 अप्रैल। जयपुर विकास प्राधिकरण के प्रवर्तन दस्ते द्वारा जोन-12 में निजी खातेदारी की करीब 22 बीघा कृषि भूमि पर 05 नवीन अवैध कॉलोनियों को प्रारंभिक स्तर पर ही पूर्णतः ध्वस्त किया गया। जोन-7 में क्वींस रोड़ पर प्रस्तावित 30 फीट पर होटल कोन्टी इन में रोड़ पर किये गये अवैध निर्माण को ध्वस्त किया गया।

मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन ने महेन्द्र कुमार शर्मा बताया कि जोन-12 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित ग्राम सरना डूंगर पुलिस चौकी के पास जिला जयपुर में खसरा नं. 60 में करीब 05 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गयी मिट्टी-ग्रेबल सडकें, बाउण्ड्रीवाल व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-12 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। जोन-12 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित ग्राम सरना डूंगर पुलिस चौकी के पास जिला जयपुर में ही खसरा नं. 70 में करीब 05 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गयी मिट्टी-ग्रेबल सडकें, बाउण्ड्रीवाल व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-12 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया।

जेडीए द्वारा जोन-12 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित खोरा दौलतपुरा रोड़ जिला जयपुर में करीब 04 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गयी मिट्टी की सड़कें, बाउण्ड्रीवाल, मकानों के ढाँचे व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-12 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मषीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। जोन-12 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित खोरा दौलतपुरा रोड़ बेनाड़ की तन गैस लाईन के पास जिला जयपुर में ही करीब 04 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गयी मिट्टी, ग्रेबल सड़कें, बाउण्ड्रीवाल, व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-12 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मषीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। इसी प्रकार जोन-12 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित खोरा दौलतपुरा रोड़ ग्राम नांगल सिरसी की तन पैंथर स्टेडियम के पास जिला जयपुर में करीब 04 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गयी ग्रेबल सड़कें, बाउण्ड्रीवाल व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-12 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मषीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। उक्त कार्यवाहिया प्रवर्तन अधिकारी जोन-12, 13 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।

जेडीए द्वारा जोन-07 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित क्वी-ंस रोड़ पर प्रस्तावित 30 फीट रोड़ पर होटल कोन्टी इन में रोड़ पर अवैध रूप से बनाये गये 02 कमरों इत्यादि किये गये अवैध निर्माण को जोन-07 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया गया। उक्त कार्यवाहिया प्रवर्तन अधिकारी जोन-07,08 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।

भाजपा और एनडीए का एक ही लक्ष्य है विकसित भारत का निर्माण करना : नरेन्द्र मोदी

पूरा बिहार कह रहा है कि फिर एक बार एनडीए सरकार : मोदी

जमुई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज बिहार के दौरे पर हैं। पीएम मोदी ने जमुई में एक रैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। पीएम ने कहा, 'ये चुनाव विकसित बिहार के सपने को पूरा करने का चुनाव है। एक तरफ कांग्रेस और राजद जैसी पार्टियां हैं जिन्होंने अपनी सरकार के समय पूरी दुनिया में देश का नाम खराब किया था दूसरी तरफ भाजपा और एनडीए है जिसका एक ही लक्ष्य है विकसित भारत का निर्माण।'

पीएम मोदी ने कहा, 'मुझे संतोष है कि रामविलास जी के विचार को मेरा छोटा भाई चिराग पासवान पू-री गंभीरता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। बिहार की धरती पूरे देश को दिशा दिखाने वाली रही है।लेकिन दुर्भाग्य से बिहार के सामर्थ्य के साथ आज़ादी के बाद 5-6 पीढ़ियों के साथ यहां न्याय नहीं हो पाया। उन्होंने कहा कि यह जनसभा नहीं विजयी सभा है। पीएम ने कहा कि बिहार की 40 सीटें एनडीए को आशीर्वाद देने के लिए मैं आप सबको नमन करता हूं। इसलिए पूरा बिहार कह रहा है कि फिर एक बार एनडीए सरकार।

पीएम मोदी ने कहा कि 10 साल में जो हुआ वह तो ट्रेलर है, अभी तो बहुत काम करना है। बिहार और देश को बहुत आगे लेकर जाना है। यह मोदी गरीबी के ताप को सहकर यहां तक पहुंचा है। इसलिए हर गरीबी का दर्द मोदी जानता और महसूस करता है। यह मोदी की गारंटी है कि आपका सपना ही मेरा संकल्प है। इसलिए केंद्र सरकार ने गरीब कल्याण सर्वोच्च प्राथमिकता दी। बिहार के गरीबों को 37 लाख पक्के मकान मिले हैं। नौ करोड़ लोगों को मुफ्त राशन मिला है और मोदी की गारंटी है आगे पांच साल तक मिलता रहेगा

पीएम मोदी ने 'बेदाग रिकार्ड' के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सराहना की। मोदी ने 'रेलवे में नौकरी के बदले भूमि' घोटाले का जिक्र करते हुए कहा कि 'हमारे सहयोगी नीतीश बाबू (बिहार के मुख्यमंत्री) भी रेल मंत्री थे। उनका कितना बेदाग रिकॉर्ड था।' 'रेलवे में नौकरी के बदले भूमि' मामले में राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद आरोपी हैं। प्रधानमंत्री ने राजद-कांग्रेस गठबंधन पर 'अयोध्या में राम मंदिर का अपमान करने' और 'देश के राष्ट्रपति के रूप में एक आदिवासी महिला (द्रौपदी मुर्मू) के चुनाव का विरोध करने' का भी आरोप लगाया।

मोदी की गारंटी के जवाब में कांग्रेस के पास क्या? अब इस 'हथियार' से किया पलटवार!

नयी दिल्ली।

इस बार चुनावी राजनीति में गारंटी शब्द की धूम है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी के जवाब में कांग्रेस भी अपनी गारंटी लेकर आ गई है। पीएम मोदी रैली और जनसभा के मंच से गारंटी दे रहे हैं तो कांग्रेस घर-घर जाकर गारंटी बांटने की तैयारी कर रही है। कांग्रेस ने आज से घर-घर गारंटी अभियान की शुरुआत की है। मतलब 2024 के लोकसभा चुनाव में इस बार जनता को मोदी और कांग्रेस की गारंटी में चुनाव करना है। 2024 की बिसात में दोनों बड़े राजनीतिक दल अब गारंटी के सहारे जनता के दिल में जगह बनाने की कोशिश में हैं। मोदी की गारंटी की तोड़ निकालने के लिए कांग्रेस अपनी गारंटी का सहारा ले रही है।

कार्ड के जरिए कांग्रेस 8 करोड़ वोट-रों तक पहुंचने की तैयारी में है। कांग्रेस ने आज घर-घर गारंटी अभियान की शुरुआत दिल्ली की उत्तर पूर्वी लोकसभा सीट से की। कांग्रेस की गारंटियां एक कार्ड में दर्ज हैं, जिन्हें वो दरवाजे-दरवाजे बांट रही है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने घर-घर गारंटी अभियान के तहत लोगों के घर जाकर गारंटी कार्ड बांटा।

कांग्रेस की 25 गारंटियों में से कुछ बड़ी गारंटियां हैं

- केंद्र सरकार की नई नौकरियों में 50% महिला आरक्षण।
- स्वामीनाथन फॉर्मूले के तहत किसानों को टरढ की कानूनी गारंटी।
- शहरों के लिए भी मनरेगा जैसी नई योजना की गारंटी।
- पेपर लीक रोकने के लिए नए कानून और नीतियां।
- एससी–एसटी–ओबीसी को आरक्षण का पूरा हक की गारंटी शामिल है।

अब देखना होगा कि इस चुनावी समर में देश की जनता किसकी गारंटी पर भरोसा जताती है और किसे सत्ता तक पहुंचाती है।

कांग्रेस के गारंटी कार्ड में क्या है?

भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे ने कुछ वादे किए थे, जिन्हें गारंटी कार्ड में लिखा गया है। गारंटी कार्ड में कांग्रेस पार्टी के पांच न्याय और पच्चीस गांरटी लिखी हुई है। कांग्रेस के हर एक न्याय में 5 गारंटी है। कांग्रेस के 5 न्याय हैं, युवा न्याय, नारी न्याय, किसान न्याय, श्रमिक न्याय और हिस्सेदारी न्याय।

बीजेपी में शामिल हुए गौरव वल्लभ, आज ही कांग्रेस से दिया इस्तीफा

नयी दिल्ली। कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद गौरव वल्लभ अब भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए हैं। लोकसभा चुनाव से पहले वल्लभ का पलायन कांग्रेस के लिए बड़े झटके के तौर पर माना जा रहा है। गौरव ने कांग्रेस पर दिशाहीन पार्टी होने का आरोप लगाया था। बता दें कि गौरव वल्लभ कांग्रेस की तरफ से राष्ट्रीय प्रवक्ता भी थे। बिहार कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अनिल शर्मा ने भी गौरव वल्लभ के साथ बीजेपी महासचिव विनोद तावड़े की मौजूदगी में पार्टी की सदस्यता ली। महज दो दिनों के भीतर ही कांग्रेस को तीन राज्यों में तीन बड़े झटके लगे हैं। राजस्थान से आने वाले वल्लभ ने और बिहार कांग्रेस के दिग्गज अनिल शर्मा ने बीजेपी का दामन थामा। वहीं, तनातनी के बीच महाराष्ट्र के नेता संजय निरुपम ने भी कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना का दामन थामा।गौरव वल्लभ ने पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को दिए गए इस्तीफ़े में लिखा कि पार्टी नए भारत की आकांक्षा को बिल्कुल नहीं समझ पा रही है। इससे मेरे जैसा कार्यकर्ता हतोत्साहित महसूस कर रहा है। मैं राम मंदिर पर पार्टी के स्टैंड से क्षुब्ध हूं। मैं कर्म से हिंदू हूं। मैं सनातन विरोधी नारे नहीं लगा सकता। पार्टी और गठबंधन के कई लोग सनातन विरोधी नारे लगाते हैं और पार्टी का उस पर चुप रहना उसे मौन स्वीकृति देने जैसा है। मैं सुबह-शाम देश के वेल्थ क्रिएटर्स को गाली दे नहीं दे सकता, इसलिए मैं कांग्रेस पार्टी के सभी पदों और प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफ़ा दे रहा हूं।

झारखंड के गिरिडीह में यात्री बस से 1.09 करोड़ रुपए जब्त

रांची/एजेंसी।

झारखंड के गिरिडीह जिले में जीटी रोड पर बुधवार देर रात वाहनों की चेकिंग के दौरान एक यात्री बस से एक करोड़ नौ लाख रुपए जब्त किए गए। गिरिडीह के एसपी दीपक कुमार शर्मा ने इसकी पुष्टि की है। आशंका है कि इस रकम का इस्तेमाल चुनाव कार्य को प्रभावित करने के लिए किया जाना था।

जिस बस से रकम की बरामदगी हुई, वह बिहार के गया से कोलकाता जा रही थी। एसपी के अनुसार, उन्हें सूचना मिली थी कि यात्री बस में बड़ी रकम ले जाई जा रही है। इस आधार पर फ्लाइंड स्क्वॉड टीम को अलर्ट किया गया। बगोदर थाना क्षेत्र के औरा नामक स्थान पर चेकिंग के दौरान महारानी नामक यात्री बस से एक करोड़ नौ लाख रुपए जब्त किए गए। इसकी सूचना आयकर विभाग को दी गई है। झारखंड में पिछले 10 दिन के दौरान अलग-अलग जिलों में पुलिस ने कुल मिलाकर करीब दो करोड़ की रकम जब्त की है। लोकसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही पूरे देश में आदर्श आचार संहिता लागू है।

एक नजर

सर्वे के 14 वें दिन नींव की तलाश में हो रही खुदाई

धार। अदालत के आदेश पर आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की टीम 14वें दिन धार की भोजशाला का सर्वे कर रही है। हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस की राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट रंजना अग्निहोत्री भी वहां मौजूद हैं। उनका कहना है कि सारा काम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार ही चल रहा है। हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस की राष्ट्रीय अध्यक्ष रंजना अग्निहोत्री आज दूसरे दिन धार में हैं। वे राजा भोज के समकालीन स्मारकों का भी अवलोकन करेंगी, जिसमें शहर के विजय मंदिर व मांडू स्थित संग्रहालय भी जाएंगी। इधर, सर्वे टीम गुरुवार को भोजशाला की नींव तक पहुंचने के लिए इसके पिछले हिस्से में खुदाई कर रही है। अभी तक नींव नहीं मिली है। यहां 2 सीढ़ियां जरूर पुराने जमाने के पत्थरों की नजर आई हैं, इससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि नीचे तलघर की ओर जाने का कोई रास्ता हो सकता है। टीम का पूरा फोकस अभी इसी है। वहीं आज फिर गर्भगृह में भी एक टीम काम करेगी। एडवोकेट रंजना अग्निहोत्री ने भोजशाला परिसर से बाहर निकलकर बताया कि हम सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के आदेशों की प्रति लेकर अंदर गए थे। वहां सर्वे टीम से चर्चा हुई है।

जोगी डेरा मुहल्ले में सड़क पर भरा पानी लोगों की बढ़ा रहा परेशानी

औरैया। सहार ब्लॉक के ग्राम पंचायत ढिकियापुर के मजरा जोगी डेरा मुहल्ले में पानी की निकासी न होने के चलते सड़क पर जलभराव हो रहा है। ग्रामीणों को आने जाने में समस्याओं का सामना तो करना पड़ ही रहा है, साथ ही जलभराव से मच्छरों का प्रकोप भी लगातार जारी है। जल निकासी की समस्या को लेकर बीते चार दिवस पूर्व ग्रामीणों ने उप जिलाधिकारी बिधूना को लिखित प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया था। जिसमें उप जिलाधिकारी ने बीडीओ को मौके पर जाकर समस्या से निजात दिलवाने की बात कही थी। प्रार्थना पत्र में ग्रामीणों ने समस्या का समाधान ना होने पर आगामी लोकसभा चुनाव का बहिष्कार करने का ऐलान किया था। मुहल्ला वासियों ने कहा कि अगर समस्या का हल न हुआ तो इसका परिणाम राजनीतिक लोगों को चुनावों में भुगतना पड़ेगा। स्थानीय निवासियों ने बताया कि इसके लिए बार-बार उन्होंने विभाग को बताया, मगर उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

शराब की तस्करी करते छह आरोपित गिरफ्तार

हरिद्वार। पथरी थाना अंतर्गत फेरुपुर चौकी पुलिस ने चौकी इंचार्ज नवीन चौहान के नेतृत्व में अलग-अलग जगहों पर छापेमारी कर 100 लीटर कच्ची शराब के साथ दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। फेरुपुर चौकी पुलिस को मुखबिर से फेरुपुर और टिकोला गांव में शराब की तस्करी करने की सूचना मिली। सूचना पर कार्रवाई करते हुए चौकी प्रभारी ने टिकोला गांव से देशराज पुत्र तेजपाल और फेरुपुर से शुभम पुत्र मगि राम को उनके घर से गिरफ्तार किया। जिनके पास से पुलिस ने 50-50 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की है। पुलिस ने गिरफ्तार दोनों आरोपितों के विरुद्ध आबकारी अधिनियम में कार्रवाई करते हुए धारा 60 के अन्तर्गत मुकदमा दर्ज किया है। दूसरी ओर लक्सर पुलिस ने छापेमारी कर अलग-अलग जगह से चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है।

नारायण मूर्ति ने कहा- 50 साल पहले यूरोप यात्रा के दौरान 120 घंटे तक रहा था भूखा

संयुक्त राष्ट्र। इंफोसिस के संस्थापक एन.आर. नारायण मूर्ति ने संयुक्त राष्ट्र में मंगलवार को बताया कि वे 50 साल पहले यूरोप यात्रा के दौरान 120 घंटे तक भूख सहना पड़ा था। नारायण मूर्ति संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन द्वारा यहां संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मूर्ति ने खाद्य सुरक्षा में उपलब्धियां: सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में भारत के प्रयास विषय पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। भारतीय गैर सरकारी संगठन अक्षय पात्र फाउंडेशन द्वारा चार अरबवां भोजन परोसे जाने के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में खाद्य सुरक्षा और पोषण में भारत की नवोन्मेषी रणनीतियों, नीतियों और उपलब्धियों तथा एसडीजी, विशेष रूप से शून्य भूख के लक्ष्य के साथ उनके संयोजन को दर्शाया गया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के राजनयिकों, अधिकारियों, शिक्षाविदों, सामाजिक संगठनों और भारतवंशी समुदाय के सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा, आपमें से कई ने भूख को नहीं सहा होगा। मैंने किया है। नारायण मूर्ति ने कहा कि 50 साल पहले मैंने यूरोप में यात्रा करते हुए 120 घंटे लगातार भूख सही थी। यह निश नामक स्थान की बात है जो बुल्गारिया और तत्कालीन यूगोस्लाविया और सर्बिया के बीच सीमा पर स्थित एक शहर है।

बांग्लादेश में थर्मल पॉवर प्लांट में हमला

ढाका। बांग्लादेश में बुधवार रात करीब 11:30 बजे पचास से ज्यादा हथियारबंद हमलावरों ने रामपाल थर्मल पॉवर प्लांट में धावा बोला। इस दौरान किए गए हमले में पांच सुरक्षाकर्मी घायल हो गए। यह हमला प्लांट परिसर में टावर नंबर 3 के पास वार्ड नंबर 5 पर हुआ। घटना की पुष्टि प्लांट के उप महाप्रबंधक अनवारुल अजीम ने की है। ढाका ट्रिब्यून समाचार पत्र की रिपोर्ट के अनुसार, हथियारबंद व्यक्तियों ने प्लांट के आवासीय क्षेत्रों में घुसपैठ करने का प्रयास किया। गार्डों ने हमलावरों के प्रयास को विफल करने की कोशिश की तो उनपर हमला किया गया। घायलों में से दो को तत्काल खुलना मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया। शेष तीन का इलाज रामपाल उपजिला स्वास्थ्य परिसर में किया गया। रामपाल थाना प्रभारी सोमेन दास ने कहा कि अपराधियों को पकड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। एहतियात के तौर पर प्लांट और उसके आसपास के क्षेत्रों में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है।

ब्रज का विकास भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार में हुआ है : योगी

- राम आए हैं, कृष्ण भी आएंगे : योगी आदित्यनाथ
- अयोध्या के लिए 500 वर्षों का इंतजार किया

मथुरा। एजेंसी

लोकसभा प्रत्याशी और एक्ट्रेस हेमा मालिनी ने गुरुवार को नामांकन किया। नामांकन के बाद हेमा मालिनी के समर्थन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विजय संकल्प नामांकन जनसभा की। योगी ने कहा अयोध्या, मथुरा और काशी में सबसे पहले चुनाव मथुरा में हो रहा है, तो संदेश यहीं से जाना चाहिए। अयोध्या में रामलला विराजमान हो गए हैं। काशी का भी काम हो गया है। अब मथुरा इंतजार कर रही है कि राम आए हैं, कृष्ण भी आएंगे। योगी ने भगवान श्रीकृष्ण की धरा से राधे-राधे बिहारी लाल की जय के स्वरों से अपने संबोधन की शुरुआत की। सीएम योगी ने कहा हेमा मालिनी ने इस क्षेत्र को नई पहचान दी है। मथुरा से हेमा मालिनी को तीसरी बार नामांकन करने की बधाई। उन्होंने आगे- कहा नामांकन की प्रक्रिया पूरी होने पर हर दल का प्रत्याशी आएगा। किसी भी दल में प्रत्याशी ढूंढे नहीं मिल रहा है। उधार में प्रत्याशी ला रहे हैं। उन्होंने आगे कहा- कन्हैया के बारे में कहा जाता है, उन्होंने 16 कला के साथ अवतार लिया। आज कला जगत की हेमा मालिनी मैदान में हैं। मैं कुछ दिन पहले यहां आया था। आज फिर आया हूं। उन्होंने कहा कि जनता ने कांग्रेस और सपा को भी अवसर दिया। बसपा को भी अवसर दिया। मगर, सभी पार्टियों ने जनता को ठगा। ब्रज का विकास भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार में हुआ है। अयोध्या के लिए 500 वर्षों का इंतजार किया, मगर संघर्ष से कभी पीछे नहीं हटे। मथुरा का मामला भी कोर्ट में है, निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। राम आए हैं, कृष्ण भी आएंगे। उन्होंने कहा कि अयोध्या में पहले मथुरा-वृंदावन की तरह कुंज गलियां थीं। आज वहां पर फोरलेन और सिक्सलेन के हाईवे हैं। अयोध्या में राम मंदिर बनने के बाद वहां हर वर्ग खुश है। वहां समृद्धि आई है। रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। कई गुना लोगों की आमदनी बढ़ गई है। भाजपा ने पहले ही कहा था कि काशी और अयोध्या में जो कार्य करना है, उसको लाइनअप किया है। कहा कि अब लोगों को पूरा फोकस ब्रज भूमि पर करना है। यमुना मैय्या की शुद्धिकरण से लेकर मथुरा-वृंदावन के कुंडो के संरक्षण का काम भाजपा सरकार करेगी। हेमा मालिनी तीसरी बार रिकार्ड मतों से जीत कर संसद में जाएंगी। कहा कि अयोध्या, काशी, मथुरा में सबसे पहले चुनाव मथुरा में हो रहा है। यहीं से संदेश भी जाना चाहिए।

अबकी बार डेढ़ नहीं पांच लाख वोटों से होगी भाजपा की जीत : प्रकाश पाल

कानपुर। एजेंसी

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कानपुर लोकसभा सीट पर जीत की हैट्रिक लगाने जा रही है। इसका अंदेशा विपक्षी गठबंधन को भी हो गया है, लेकिन उन्हें यह पता नहीं है कि जीत कितनी भारी होने जा रही है। जनता का रुझान और पार्टी कार्यकर्ताओं की जबरदस्त मेहनत स्पष्ट बयां कर रही है कि अबकी बार डेढ़ लाख नहीं पांच लाख से अधिक वोटों से भाजपा की जीत होगी। यह बातें गुरुवार को भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने कही। उन्होंने कहा कि कोई भी चुनाव हो उम्मीदवार से अधिक संगठन की भूमिका अहम होती है और भाजपा के पास मजबूत संगठन है। पार्टी की नीतियों और मोदी सरकार की उपलब्धियों को हमारे कार्यकर्ता सीधे घर-घर तक पहुंचाने में सफल हो रहे हैं। भाजपा 2014 और 2019 में भी मजबूत बूथ प्रबंधन के दम पर चुनाव जीती थी। प्रत्येक बूथ पर पिछली बार की अपेक्षा अबकी बार 370 वोट अधिक लाने का लक्ष्य रखा गया है। कानपुर लोकसभा क्षेत्र में 1607 बूथ और 22 हजार से ज्यादा पन्ना प्रमुख हैं। 2019 के चुनाव में एक लाख पचपन हजार मतों से भाजपा जीती थी परंतु अबकी बार पांच लाख वोटों से भाजपा प्रत्याशी की जीत होगी। प्रत्येक बूथ पर पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों के अलग-अलग व्हाट्सएप ग्रुप बने हुए हैं। इन व्हाट्सएप ग्रुप में पार्टी द्वारा नियमित रूप से प्रचार से जुड़े संदेश भेजें जा रहे हैं। आगे कहा कि 14 अप्रैल अंबेडकर जयंती के दिन हर बूथ पर पार्टी टिफिन बैठकें कर समरसता दिवस मनाएंगी। 9 से 17 अप्रैल तक नवरात्र के दौरान महिला मोर्चा द्वारा मंदिरों में कन्या पूजन के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। शक्ति केंद्र स्तर पर पंच परमेश्वर बूथ अध्यक्ष, बीएलए2, बूथ सचिव बस्ता प्रमुख की बैठकें होंगी।

नवविवाहिता ने लगाई फांसी, 14 महीने पहले हुई थी शादी

जालौन। जिला झांसी के पूंछ थाना क्षेत्र के ग्राम खगल निवासी अशोक कुमार ने बीते वर्ष 2023 की 15 फरवरी को अपनी बेटी दीप्ति 21 वर्ष की शादी रंजीत निवासी ग्राम चिल्ली कोतवाली डकोर के साथ की थी। जहां बुधवार शाम को संदिग्ध हालात में घर के ही कमरे में मौत हो गई। जानकारी पाकर मौके पर अशोक और बाकी मायकेवाले पहुंचे तो कमरे में दुपट्टे से दीप्ति का शव लटका देख उनके होश उड़ गए। इस बात की जानकारी पिता अशोक कुमार ने डकोर पुलिस को दी। पुलिस ने नवविवाहिता के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जहां अशोक ने बताया कि शादी के बाद से ही दीप्ति को दहेज की अतिरिक्त मांग को लेकर प्रताड़ित किया जा रहा था और रंजीत ने घरवालों के साथ मिलकर उसकी दहेज हत्या की है। फिलहाल पुलिस ने घटना को लेकर ससुराल पक्ष के दो लोगों को पकड़ कर पूछताछ शुरू कर दी है।

नवरात्र के प्रथम दिन से राष्ट्रीय भूमि सुपोषण कार्य का शुभारंभ

भारत के भविष्य के जागरण से जुड़ा है भूमि सुपोषण कार्य : डॉ. चिन्मय

हरिद्वार। एजेंसी

मनुष्य को स्वस्थ रहना जितना आवश्यक है, उतना ही भूमि का सुपोषण होना। भूमि उर्वर रहेगी, तो मनुष्य सहित अन्य जीव जन्तुओं के जीवन की कल्पना की जा सकती है। गायत्री तीर्थ शांतिकुंज के मार्गदर्शन में अखिल विश्व गायत्री परिवार देश भर के प्रमुख संस्थानों के साथ मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर भूमि सुपोषण अभियान का चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन एक विशेष अभियान का शुभारंभ कर रहा है। अभियान के अंतर्गत भूमि पूजन, भूमि सुपोषण करने वाले का सम्मान, भूमि सुपोषण प्रयोगों के प्रशिक्षण, संगोष्ठी, कार्यशालाएं, जागरूकता शिविर, प्रदर्शनी आदि आयोजित की जायेंगी। नगरीय क्षेत्रों में जैविक-अजैविक अपशिष्ट को अलग रखना, जैविक अपशिष्ट से खाद बनाना आदि गतिविधियों के लिए जागरण कार्यक्रम चलाये जायेंगे। शांतिकुंज के मार्गदर्शन में ग्राम तीर्थ योजना, वृक्ष गंगा अभियान, जैविक खेती, भागीरथी जलाभिषेक अभियान, गोपालन गोबर आधारित उत्पादों का उत्पादन, वैकल्पिक ऊर्जा (गोबर गैस) का उत्पादन एवं उपयोग, कचरा प्रबंधन आदि का सैद्धांतिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जायेगा। अपने वीडियो संदेश में देवसंस्कृति विवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि नवसंवत्सर से प्रारंभ होने वाला भूमि सुपोषण कार्य भारत के भविष्य जागरण से जुड़ा हुआ है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि चैत्रमास जगद्रष्टा ससर्ज पृथमेहनि कहकर भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया।

प्रचंड बहुमत से जीतेंगे घोसी लोकसभा : बृजेश

मऊ। एजेंसी

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक अपने एक दिवसीय चुनावी दौरे पर गुरुवार को मऊ पहुंचे और पत्रकारों से बातचीत किया। उन्होंने कहा कि घोसी लोकसभा का चुनाव एनडीए गठबंधन के उम्मीदवार अरविंद राजभर प्रचंड बहुमत से जीतेंगे। उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक भारतीय जनता पार्टी और भारतीय सुहेलदेव समाज पार्टी गठबंधन के प्रत्याशी अरविंद राजभर के समर्थन में अपने पार्टी कार्यकर्ताओं से समीक्षा बैठक कर उन्हें जीत का मंत्र देंगे। बृजेश पाठक ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि अरविंद राजभर जो घोसी लोकसभा से प्रत्याशी हैं वह प्रचंड बहुमत से चुनाव जीत रहे हैं। पार्टी के अंदर कोई अंदरुनी कलह नहीं है, सब मिलकर चुनाव में लगे हुए हैं। एक परिवार है सब ठीक कर लिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 2023 घोसी विधानसभा के उपचुनाव में बृजेश पाठक ने एक सप्ताह मऊ में कैंप किए थे, लेकिन उसके बावजूद भी जनता ने भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार दारा सिंह चौहान को एक सिरे से नकार दिया था। अब देखना यह होगा की 2024 के लोकसभा चुनाव में गठबंधन के प्रत्याशी अरविंद राजभर को सफलता मिल पाती है या नहीं।

महिलाओं के सम्मान को ठेस पहुंचाना कांग्रेस की पुरानी संस्कृति : अपर्णा

- महिलाओं के सम्मान को ठेस पहुंचाना कांग्रेस की पुरानी संस्कृति है

लखनऊ। एजेंसी

भारतीय जनता पार्टी की नेता अपर्णा यादव ने सांसद हेमामालिनी पर कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला के बयान की कड़ी आलोचना की है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के सम्मान को ठेस पहुंचाना कांग्रेस की पुरानी संस्कृति है। अपर्णा ने गुरुवार को प्रदेश भाजपा मुख्यालय पर पत्रकारों से कहा कि कांग्रेस महिलाओं का अपमान करती है। महिलाओं का अपमान करना कांग्रेस के डीएन में है। महिलाओं के सम्मान को ठेस पहुंचाना कांग्रेस की पुरानी संस्कृति रही है। भाजपा महिलाओं का सम्मान करती है। अपर्णा ने कहा कि जिस तरह से महाभारत में दुर्योधन और दुशासन ने महिलाओं का अपमान किया था और उनका परिणाम भुगतना पड़ा था कुछ वैसा ही कांग्रेस के साथ भी होगा। सुरजेवाला ने हरियाणा के कैथल में एक जनसभा में कहा था कि विधायक-सांसद चुने जाते हैं विकास करने के लिए। हेमा मालिनी को क्यों लाया जाए ताकने के लिए। सुरजेवाला का यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। इसको लेकर भाजपा आक्रामक है।

बच्चों से भरी स्कूल वैन में लगी आग

जौनपुर। गौराबादशाहपुर थाना अंतर्गत थाने के पास बच्चों से भरी बीएजी स्कूल के बच्चों को लेकर घर छोड़ने जा रही वैन में गुरुवार दोपहर अचानक आग लग गई। आग लगने से बच्चे चीखने-चिल्लाने लगे, शोर शराबा सुनकर पुलिस और स्थानीय लोगों ने किसी तरह से बच्चों को वैन से सुरक्षित निकाला। हालांकि स्कूल वैन पूरी तरह से जलकर खाक हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस के आला अफसर मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल शुरू कर दी है। इस मामले में जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक शहर बृजेश कुमार ने बताया कि बीएजी पब्लिक स्कूल नयनसण्ड के बच्चे स्कूल वैन से अपने-अपने घर जा रहे थे कि थाना गौराबादशाहपुर मंदिर के पास समय करीब उक्त वाहन की बैटरी में शार्ट सर्किट हो जाने के कारण उक्त वाहन में आग लग गयी। थाना पर मौजूद पुलिस बल द्वारा जनता के लोगों की मदद से वैन में बैठे सभी बच्चों को सकुशल बाहर निकालकर उक्त वाहन में लगी आग को फायर ब्रिगेड की मदद से बुझाया गया। सभी बच्चे सुरक्षित हैं और उन्हें सकुशल घर पहुंचा दिया गया है।

अपने प्रतिनिधि का चयन करना प्रत्येक मतदाता का कर्तव्य : प्रियंका निरंजन

मीरजापुर। एजेंसी

लोकसभा चुनाव में शत-प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने के लिए गुरुवार को नगर के नारघाट स्थित गंगा नदी से फतहां घाट तक एक नाव रैली आयोजित की गई। लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने के लिए आयोजित इस रैली को जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंका निरंजन और पुलिस अधीक्षक मनोरंजन सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि जाति, धर्म या किसी भी अन्य कारण से परे अपने प्रतिनिधि का चयन करना प्रत्येक मतदाता का कर्तव्य है। इस दौरान वहां पुलिस अधीक्षक अभिनंदन सिंह समेत अन्य अधिकारी एवं लोग उपस्थित थे। गौरतलब है कि शत-प्रतिशत मतदान के उद्देश्य से मीरजापुर जिला प्रशासन मतदान पर जागरूकता कार्यक्रमों की एक श्रृंखला शुरू कर रहा है। रैली के पूर्व प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने गंगा घाट पर कलाकृतियां बनाई, सास्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेकर नारे लगाए और घाट पर मौजूद लोगों के बीच मतदान की आवश्यकता पर हैंडबिल वितरित किया।

योग कार्यशाला | **अभ्यर्थियों ने किया यौगिक जॉगिंग का अभ्यास**

योग के नियमित अभ्यास से व्याधिमुक्त होगा जीवन: ज्वाला

मीरजापुर। एजेंसी

- वर्तमान समय में जो व्यक्ति योग, आसन व प्राणायाम नहीं करेगा, वह स्वस्थ नहीं रह सकता है

चुनार तहसील अंतर्गत कोलना स्थित आदर्श जनता महाविद्यालय में पतंजलि युवा भारत एवं मां बलिराजी योग संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में जनपद समेत अन्य जिलों से आए बीएड अभ्यर्थियों ने पांच दिवसीय योग कार्यशाला के चौथे दिन गुरुवार को यौगिक जॉगिंग का अभ्यास किया। युवा भारत के प्रदेश महामंत्री एवं राष्ट्रीय योगासन जज योग गुरु ज्वाला सिंह ने योग कार्यशाला में आए हुए अभ्यर्थियों को योग जॉगिंग का अभ्यास करते हुए कहा कि अगर मनुष्य को अपने शरीर को स्वस्थ, सुडौल, खुबसूरत व मजबूत बनाना है तो उसे नियमित रूप से यौगिक जॉगिंग का अभ्यास करना पड़ेगा। अगर साधक नित और नियमित इसका अभ्यास करते तो वह विभिन्न व्याधियों से मुक्त हो सकता है। उन्होंने युवा अभ्यर्थियों को भस्त्रिका प्राणायाम, कपालभाति एवं अनुलोम विलोम प्राणायाम के साथ भ्रामरी व उदगीत आदि प्राणायाम का अभ्यास कराया और कहा कि यदि योग आसन के साथ ही प्राणायाम का अभ्यास किया जाए मनुष्य मानसिक रूप से मजबूत होगा और वह कभी भी अनिद्रा, तनाव, चिंता व कुंठा जैसे समस्याओं से बच जाएगा। वह सदा आनंदित व पूर्ण रूप से निरोग रहेगा। जीरो बैलेंस से मुक्ति का मार्ग है योग प्रभारी प्राचार्य प्रदीप कुमार सिंह ने कहा कि जीरो बैलेंस से मुक्ति का मार्ग है योग। योग की विद्या को आत्मसात करने वाला मानव अपने भीतर की छिपी हुई अदृश्य शक्तियों को पहचान पाता है और लगातार योग प्राणायाम के अभ्यास से वह उसका स्वामी बन जाता है।

व्याधिमुक्त व समाधियुक्त जीवन की संकल्पना है योग

डिस्ट्रिक्ट योगासन खेल संघ के अध्यक्ष डॉ. अमन सिंह यादव ने कहा कि व्याधिमुक्त व समाधियुक्त जीवन की संकल्पना है योग। वर्तमान समय में जो व्यक्ति योग, आसन व प्राणायाम नहीं करेगा, वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। इसलिए जीवन में स्वस्थ रहने के लिए हमें योग को स्वीकार कर इसका अभ्यास करना होगा।

चुनावों को गंभीरता से लें पदाधिकारी जमीनी स्तर पर करें काम : जेपी नड्डा

इंदौर। एजेंसी

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी पदाधिकारियों से कहा कि चुनाव को लेकर मुगालता न पालें, उसे गंभीरता से लें और जमीनी स्तर पर काम करें। रैली-जुलूसों से कुछ नहीं होगा। लोगों से सीधा संपर्क करें, उनकी समस्याएं जाने और हल करने की कोशिश करें। सरकारी योजनाओं का कितना लाभ मिला है, संपर्क अभियान के दौरान लोगों से इसका फीडबैक लें। उन्हें यह भी बताएं कि राष्ट्रवाद को लेकर कौन सा दल समर्पित है। भाजपा अध्यक्ष नड्डा बुधवार को इंदौर में मालवा निमाड़ की पांच लोकसभा सीटों की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। करीब डेढ़ घंटे चली बैठक के दौरान उन्होंने चुनाव प्रभारियों से सीधे संवाद किया और अब तक हुई तैयारियों से जुड़े सवाल पूछे। भाजपा अध्यक्ष नड्डा मध्य प्रदेश के अपने दो दिवसीय प्रवास के दूसरे दिन बुधवार को पहले उज्जैन पहुंचे और अपने परिवार के साथ भगवान महाकाल का पूजन-अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद शाम को वे इंदौर पहुंचे, जहां पार्टी पदाधिकारियों की बैठक ली। दो घंटे देरी से शुरू हुई इंदौर क्लस्टर की बैठक में नड्डा ने धार, झाबुआ, इंदौर, खरगोन और खंडवा के भाजपा उम्मीदवार, चुनाव प्रभारी, मंत्रियों से कहा कि मैं भाषण देना नहीं चाहता।

संक्षिप्त समाचार

बालेर अष्टभुजा देवी मेले में नाल दंगल प्रतियोगिता में 108 किलो वजन की नाल उठाकर लाला गुर्जर- सोनू जादौन बने दंगल केसरी

- 130 किलो वजन की नाल उठाने में सभी पहलवान रहे नाकाम
- सांप्रादायिक सौहार्द का प्रतीक है अष्टभुजा देवी का मेला

चमकता राजस्थान/बालेर/विशाल अग्रवाल। सवाई माधोपुर जिला मुख्यालय से 60 किमी दूर ग्राम पंचायत बालेर के तत्वावधान में अष्टभुजा देवी मेले में गुरुवार को नाल दंगल प्रतियोगिता आयोजित की गई। नाल दंगल प्रतियोगिता में राजस्थान सहित कई राज्यों के नामी पहलवानों ने अपना दमखम दिखाया। नाल दंगल प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि ठा. मानवेन्द्र सिंह राजावत रहे।
इस दौरान सरपंच प्रतिनिधि रामवीर मीना, ग्राम विकास अधिकारी मांगीलाल गुर्जर, कुरेड़ी सरपंच राजेंद्र जाट, जिला परिषद सदस्य गजानंद बैरवा एवं जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य मौजूद रहे।

नाल दंगल प्रतियोगिता देखने के लिए उमड़ा जनसैलाब

चमकता राजस्थान/जयपुर। नाल दंगल में प्रथम चरण में 108 किलो वजन की नाल में पहलवानों ने दमखम दिखाया गया। इस दौरान 108 किलो नाल के लाला गुर्जर करौली व सोनू जादौन करौली ने नाल उठाकर जीत हासिल कर नाल दंगल के केसरी बने । 108 किलो नाल के द्वितीय विजेता विपीन बैरवा हाथरस रहे। तृतीय विजेता नीलू पंडित हाथरस रहे।
बड़ी संख्या में पहुँचे लोगो प्राकृतिक स्टेडियम में हजारों दर्शक मौजूद रहे। मेला स्टेडियम में मौजूद दर्शकों ने विजेता पहलवानों का उत्साहवर्धन किया।जैसे ही पहलवानों ने नाल को उठाया तो पूरा स्टेडियम तालियों की आवाज से गूंज उठा। दर्शकों ने विजेता पहलवानों को दर्शक दीर्घा में बुलाकर पारितोषिक दिया।।
130 किलो वजन की नाल में सभी पहलवानों ने दमखम दिखाया लेकिन 130 की नाल उठाने वाले पहलवान असफल रहे।

सांप्रादायिक सौहार्द का प्रतीक है अष्टभुजा देवी माता का मेला

चमकता राजस्थान/जयपुर। ग्राम पंचायत द्वारा प्रतिवर्ष चेत्र मास की शीतला अष्टमी पर अष्टभुजा देवी चार दिवसीय का मेला आयोजित किया जाता है। जिसमें कस्बे सहित प्रदेश के कोने कोने से श्रद्धालु माता के दरबार मे हाजरी लगाकर मनोती मांगते है।
माता के मेले बाज़ार में सौंदर्य प्रसाधन, कृषि उपकरण, एवं रसोई में काम आने वाले वाले उपकरण, मिट्टी के बर्तन, बच्चो के खिलौने की जमकर खरीदारी करते है। तथा बच्चे भी चाट, पकौड़ी, जलेबी,आइसक्रीम,का लुफ्त उठाते है।

आज होगा सुल्तानों का महामुकाबला

चमकता राजस्थान। जयपुर। अष्टभुजा देवी के मेले में चौथे दिन शुक्रवार को राजस्थान के कई जिले एवं जम्मू, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश से पहलवान आएंगे और अखाड़े के सुल्तान बनने के लिए दांवपेंच लगाएंगे। कुश्ती दंगल के बाद विजेता पहलवानों को ग्राम पंचायत द्वारा पारितोषिक वितरण किया जाएगा एवं मेले का समापन किया जाएगा।

गहलोत ने अपने रिश्तेदारों को 15 करोड़ की जमीन महज 3.67 करोड़ में दिलाई, पहले भी चौहान बंधुओं को अवैधानिक रूप से खाने आवंटित कर चुके गहलोत: अरूण चतुर्वेदी

पेपर लीक के खिलाफ एक्शन में भाजपा की भजनलाल सरकार, इतिहास में पहली ऐसी कार्रवाई, ट्रेनिंग के दौरान 29 सब-इंस्पेक्टर हुए गिरफ्तार: अरूण चतुर्वेदी

चमकता राजस्थान

जयपुर। जयपुर, 04 अप्रैल 2024। भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर आरोप लगाते हुए कहा कि गहलोत सरकार के 2008-13 के कालखंड में विभिन्न घोटाले हुए थे। भाजपा लगातार उस कालखंड में गहलोत सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाती रही थी। जिस प्रकार वर्ष 2012 में तत्कालीन सीएम गहलोत ने चौहान बंधुओं को लाईम स्टोन की खाने अवैधानिक ढंग से आवंटित कर एक हजार करोड़ का घोटाला किया था। उसी तरह इस बार भी उन्होने अपने रिश्तेदारों को बिना नीलामी के कीमती जमीन सस्ती दरों पर दिलाकर उपकृत किया है। जोधपुर विकास प्राधिकरण ने गहलोत के दबाव में 15 करोड़ की जमीन महज 3.67 लाख में उनके रिस्तेदारों को दे दी। इस नियम विरूद्ध बेचान के खिलाफ नगरीय विकास विभाग में जांच विचाराधीन है।

पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि पूर्ववर्ती गहलोत सरकार के समय रीट से लेकर एसआई भर्ती परीक्षा सहित कुल 19 परीक्षाओं के पेपर लीक हुए और लाखों युवाओं के सपनों पर पानी फिर गया। गहलोत सरकार में पेपर लीक की इतनी घटनाएं होने के बावजूद पेपर माफियाओं के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। प्रदेश में भाजपा की भजनलाल सरकार बनने के बाद लगातार पेपर माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई जारी है, अभी तक 64 लोगों की गिरफ्तारी की गई है और इतिहास में पहली बार ऐसी कार्रवाई हुई है जब ट्रेनिंग करने वाले 29 सब-इंस्पेक्टरों को गिरफ्तार किया गया है। वहीं भाजपा सरकार आने के बाद 11 भर्ती परीक्षाएं हुई जो कि पूरी तरह पारदर्शी ढंग से हुई। भाजपा सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरों टोलरेंस की नीति पर काम कर रही है।

- **एक ओर नारी शक्ति का अपमान करने वाली कांग्रेस, दूसरी ओर 33 प्रतिशत आरक्षण वाला नारी शक्ति वंदन अधिनियम लाने वाली भाजपा:- राखी राठौड़**

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता राखी राठौड़ ने प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस के नेताओं की नारी शक्ति के प्रति किस प्रकार की मानसिकता है, वह लगातार उनके बयानों से नजर आती है। पहले राहुल गांधी ने शक्ति का अपमान किया और अब रणदीप सुरजेवाला ने महिलाओं के खिलाफ आपत्तिजनक बयान दिया है। इससे पहले कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत्र ने भाजपा की लोकसभा प्रत्याशी कंगना राणौत के खिलाफ बेहद घटिया बयान दिया था। जो प्रियंका गांधी कहती थी कि लड़की हूं लड़ सकती हूं उनकी पार्टी के नेताओं के बयान सुनकर तो नहीं लगता कि वो महिलाओं के हितों के लिए लड़ेंगी।
भाजपा प्रदेश प्रवक्ता राखी राठौड़ ने कहा कि दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं जो लगातार महिलाओं के उत्थान को लेकर प्रयासरत हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम बनाकर महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण, शौचालय, उज्ज्वला योजना, लखपति दीदी योजना, ड्रोन दीदी योजना और ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं'' जैसी मुहिम चलाई। आज देश में सेक्स रेसो की बात करें तो 1000 पुरूषों पर 1030 महिलाएं हैं जो कि मोदी सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ मुहिम का ही परिणाम है।

कांग्रेस नेताओं का कब्जा तोड़ना हमारा मकसद: जयदीप बिहानी

चमकता राजस्थान

जयपुर। राजस्थान सरकार ने पिछले दिनों राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन पर कार्रवाई करते हुए कार्यकारिणी को भंग कर दिया था। इसके बाद एडहॉक कमेटी का गठन किया है। अब एडहॉक कमेटी और सरकार मिलकर प्रदेश के 33 जिला क्रिकेट संघों में हो रही अनियमिताओं और शिकायतों की जांच में जुट गई है।
सरकार की बनाई एडहॉक कमेटी के संयोजक और बीजेपी विधायक जयदीप बिहानी ने कहा कि राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा भारी अनियमितताएं की जा रही थी। इनको दुरुस्त करने के लिए ही सरकार ने एडहॉक कमेटी का गठन किया है। यह अनियमिताएं न सिर्फ राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन में हो रही थी, बल्कि, प्रदेश के 33 जिला संघों में भी की जारी थी। इसके खिलाफ हमने जांच शुरू कर दी है।
उन्होंने कहा- सरकार की ओर से की जा रही जांच में जो भी जिला संघ दोषी होंगे, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई कर एडहॉक कमेटी बनाई जाएगी, ताकि देशभर में बदनाम हो चुके राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की साख को फिर से लौटाया जा सके। इसके लिए सरकार ने हमें 3 महीने का वक्त दिया है। फिलहाल लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया भी चल रही है। 26 अप्रैल को राजस्थान में दूसरे चरण का मतदान हो जाएगा। इसके बाद हमारा पूरा फोकस राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन पर ही होगा।

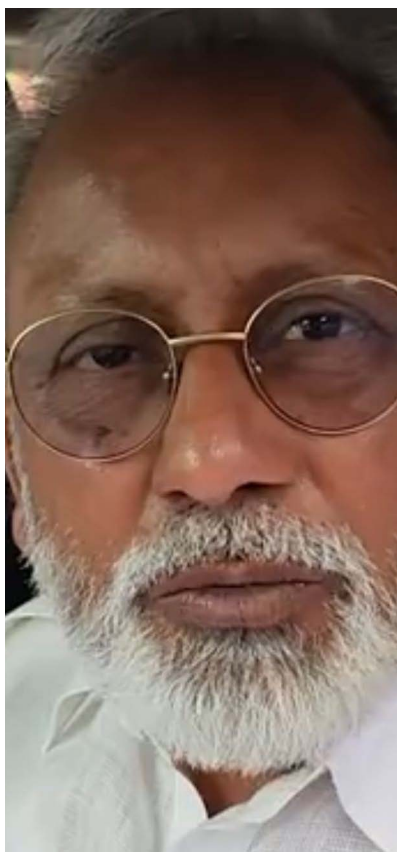

बिहानी ने कहा कि राजस्थान के काफी जिलों में कांग्रेसी नेताओं द्वारा लंबे वक्त से जिला क्रिकेट एसोसिएशन पर कब्जा किया गया था। उनका कब्जा तोड़ना हमारा मकसद है। भविष्य में सही तरीके से चुनाव कर ईमानदार पदाधिकारियों का चयन किया जाएगा और हम सब मिलकर राजस्थान में क्रिकेट की भलाई के लिए काम करेंग। ताकि राजस्थान के क्रिकेट खिलाड़ियों को प्रदेश छोड़कर दूसरे राज्यों से खेलने के लिए मजबूर ना होना पड़े। इसके लिए एडहॉक कमेटी ने सफाई अभियान शुरू कर दिया है। जल्द ही इसका असर धरातल पर नजर आने लगेगा।
जोधपुर और जयपुर में एडहॉक कमेटी के बाद दौसा, प्रतापगढ़, बारां, अजमेर, सवाई माधोपुर और डूंगरपुर जिला संघों की जांच जारी है। ऐसे में यहां भी भविष्य में एडहॉक कमेटी का गठन हो सकता है।
दरअसल, राजस्थान सरकार ने राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की कार्यकारिणी को भंग कर एडहॉक कमेटी का गठन किया था। इसके बाद 21 मार्च को जोधपुर जिला क्रिकेट संघ को भी भंग कर वहां भी एडहॉक कमेटी का गठन कर दिया है। इसके साथ ही आधा दर्जन से ज्यादा जिला संघों के खिलाफ वित्तीय अनियमिताओं और शिकायतों के आधार पर जांच शुरू कर दी गई है।
लोकसभा चुनाव बाद प्रदेश में और भी जिला संघों की कार्यकारिणी को भंग कर एडहॉक कमेटी का गठन किया जा सकता है, ताकि भविष्य में होने वाले राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के चुनाव में बीजेपी विचारधारा से जुड़े पदाधिकारी को फायदा मिल सके।

दिया कुमारी ने राजसमंद से भाजपा प्रत्याशी महिमाकुमारी की नामांकन सभा को किया संबोधित

चमकता राजस्थान/जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी में राजसमंद से भाजपा प्रत्याशी श्रीमती महिमा कुमारी की नामांकन सभा को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की नीतियों और कार्यशैली पर जनता को पूर्ण भरोसा है, जिसकी वजह से तीसरी बार 'विजय रथ' जीत की ओर अग्रसर है।
नामांकन सभा में प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ,कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत, कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत, राज्यमंत्री डॉ मंजू बाघमार, कुम्भलगढ़ विधायक सुरेंद्र सिंह राठौड़, नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़, भीम विधायक हरीसिंह रावत, राजसमंद विधायक श्रीमती दीप्ती माहेश्वरी, ब्यावर विधायक शंकर सिंह रावत, डेगाना विधायक अजय सिंह किलक, मेड़ता विधायक लक्ष्मणराम कलरु, राजसमंद जिलाध्यक्ष मानसिंह बारहठ, पूर्व सांसद पुष्प जैन, पूर्व सांसद गोपाल सिंह ईड़वा, प्रदेश मंत्री डॉ महेंद्र कुमावत, सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधिगण, पदाधिकारीगण, कार्यकर्तागण व जनता उपस्थित रही।

भंडारी ने भ्रष्ट नेताओं पर चल रही कार्यवाहियां को ईडी व सीबीआई द्वारा बंद करने पर सुप्रीम कोर्ट में लगाई याचिका

चमकता राजस्थान

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट के अधिवक्ता पूनम चन्द भंडारी ने भारत के मुख्य न्यायाधीश के समक्ष लेटर पिटीशन लगाकर मांग की है कि ईडी, सीबीआई व आयकर विभाग ने बहुत सारे भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्यवाहियां या तो बंद कर दी है या ठंडे बस्ते में डाल दी हैं, इन्होंन कहाकि पिछले कुछ वर्षों से पूरे भारत में ईडी, सीबीआई व आयकर विभाग की जबरदस्त चर्चाएं हैं। ईडी, सीबीआई व आयकर विभाग ने हजारों मुकदमें भ्रष्टाचारियों के खिलाफ दर्ज किए हैं, कुछ गिरफतारियां भी की है कुछ में जांच चल रही है। इस प्रकार की कार्यवाहियां होनी चाहिए ताकि अपराधियों में डर बना रहे क्योंकि भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह से चट कर रहा है और जनता दुखी है।
लेकिन कुछ समय से ईडी, सीबीआई व आयकर विभाग पर प्रश्न चिन्ह उठने लगे हैं और जनता में यह मैसेज जा रहा है कि बडे-बडे अपराधी जिन पर ये विभाग कार्यवाहियां कर रहे थे और कुछ को तो गिरफतार भी कर लिया था और ये मामले हजारों करोड के थे। लेकिन जैसे ही ये भ्रष्टाचारी भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर लेते हैं तो इनके विरूद्ध कार्यवाहियां या तो ठंडे बस्ते में डाल देते हैं या बंद कर देते हैं और पूरे देश में यह चर्चा का विषय है कि भाजपा वाशिंग मशीन है जिसमें भ्रष्टाचारी धुल कर साफ होजाता है। इससे न्यायालयों पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है चूंकि हम जनता के बीच रहते हैं और भ्रष्टाचार के खिलाफ लडतें हैं तो लोग हमसे पूछते हैं कि न्यायालय क्यों शांत है कोई कार्यवाही क्यों नहीं करता है ये बात हवा में नहीं है बल्कि निम्न उदाहरणों से साबित है-

1. हिमंता बिस्वा सरमा, जो असम-कांग्रेस की तरुण गोगोई सरकार में मंत्री रहे हिमंता बिस्वा सरमा को शारदा चिटफंड घोटाले में सीबीआई ने आरोपी बनाया था। सरमा पर आरोप था कि शारदा ग्रुप के डायरेक्टर सुदीप्त सेन से 20 लाख रुपए हर महीने लिए, जिससे ग्रुप का कामकाज बेहतर तरीके से चल सके। सरमा से अंतिम बार सीबीआई ने 27 नवंबर 2014 को पूछताछ की थी, हिमंता बिस्वा ने अगस्त 2015 में भारतीय जनता पाटी की सदस्यता ग्रहण कर ली इसके बाद सीबीआई ने हिमंता की फाइल बंद कर दी। हिमंता अभी असम के मुख्यमंत्री हैं।
2. शुभेंदु अधिकारी, पश्चिम बंगाल-ममता सरकार में मंत्री रहे शुभेंदु अधिकारी से सीबीआई ने शारदा घोटाले में पूछताछ शुरू की थी। उन पर आरोप था कि शारदा ग्रुप के डायरेक्टर सुदीप्त सेन से फेवर लिया था। शुभेंदु पर बाद में नारदा स्टिंग ऑपरेशन में भी पैसा लेने का आरोप लगा, जिसकी जांच ईडी ने शुरू की। जब तक शुभेंदु टीएमसी में थे, तब जांच एजेंसी उन्हें परेशान कर रही थी, लेकिन जैसे ही बीजेपी में गए तो सारे मामलों में उन्हें क्लिन चिट मिलने लगी। 2022 में बंगाल पुलिस ने शुभेंदु के खिलाफ शारदा घोटाले में जांच शुरू की थी शुभेंदु वर्तमान में बंगाल विधानसभा में बीजेपी विधायक दल के नेता यानी नेता प्रतिपक्ष हैं।
3. जितेंद्र तिवारी, पश्चिम बंगाल-आसनसोल के नेता जितेंद्र तिवारी ने 2021 में तृणमूल छोड़ बीजेपी का दामन थाम लिया था। उस वक्त मोदी सरकार में मंत्री रहे बाबुल सुप्रीयो ने उनका खुलकर विरोध किया था। सुप्रीयो ने कहा था कि कोयला चोर और तस्करों को पार्टी में क्यों लाया गया है।
4. नारायण राणे, महाराष्ट्र - बीजेपी नेता किरीट सोमैया ने उन पर आदर्श सोसायटी मामले में हेरफेर का आरोप लगाया था। नारायण राणे को भी बीजेपी ने वाशिंग मशीन में डालकर पाक-साफ कर दिया है और कैबिनेट मंत्री बना दिया।
5. प्रवीण डारेकर, महाराष्ट्र - 2009 से 2014 तक महाराष्ट नव निर्माण सेना के विधायक रहे प्रवीण डारेकर पर 2015 में मुंबई कॉपरेटिव बैंक में 200 करोड़ रुपए के घोटाले का आरोप लगाया गया था। बीजेपी ने इस मामले को जोरशोर से उठाया, जिसके बाद आर्थिक अपराध शाखा को केस की जांच सौंपी गई। लेकिन 2016 में डारेकर बीजेपी में शामिल हो गए और विधान परिषद पहुंच गए। साल 2022 में आर्थिक अपराध शाखा ने उन्हें क्लीन चिट दे दिया।
6. हार्दिक पटेल, गुजरात- पाटीदार आंदोलन के नेता हार्दिक पटेल पर बीजेपी सरकार के दौरान राजद्रोह का केस दर्ज किया गया था। हार्दिक को इसकी वजह से तड़ीपार भी रहना पड़ा था। हार्दिक पर 20 केस दर्ज किए गए थे। लेकिन हार्दिक पटेल गुजरात चुनाव से पहले कांग्रेस छोड़ बीजेपी में शामिल हो गए। राजद्रोह केस में बचने के लिए हार्दिक ने यह कदम उठाया। हार्दिक अभी बीजेपी के वीरमगाम से विधायक हैं।
7. अजीत पवार जो वर्तमान में महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री हैं उन पर प्रधानमंत्री जी ने 70000 करोड रुपए के घोटाले का आरोप लगाया था जांच चल रही थी लेकिन कुछ दिन बाद ही भाजपा ज्वाइन कर ली और इनको उपमुख्यमंत्री बना दिया गया और अब कोई जांच नहीं की जा रही है। जबकि यह आरोप तो स्वयं प्रधानमंत्री ने लगाया था किसी साधारण व्यक्ति ने नहीं लगाया ऐसे मामले में कोई कार्यवाही नहीं हो रही है।
8. कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण पर प्रधानमंत्री ने आरोप लगाया था अब वह भाजपा में आगए है और अब कोई कार्रवाई नहीं हो रही है।
9. छगन भुजबल को ईडी ने 2016 में मनलांडरिंग मामले में गिरफतार किया था उस पर आरोप था कि उसने पीडब्लूडी में मंत्री रहते हुए 100 करोड से ज्यादा के ठेके अनियमित रूप से दिए ये ठेके उसके परिवार से जुडी कम्पनियों ओर ट्रस्ट को रिश्वत के बदले दिए थे। कुछ माह पहले अजित पवार के साथ भाजपा गठबंधन सरकार में आगए और अब कोई कार्यवाही नहीं होरही है।
10. प्रफुल्ल पटेल जो अब अजित पवार की पार्टी में हैं जिसका महाराष्ट भाजपा से गठबंधन है उनका सीबीआई ने 840 करोड के घोटाले का केस बंद कर दिया जो 30 मार्च के अखबारों की सुर्खियों में है।
11. एनसीपी नेता हसन मुश्रिफ पर ईडी का केस लगा था वह जमानत के लिए भाग रहे थे वे शरद पवार की पार्टी को छोडकर अजित पवार की पार्टी में आकर भाजपा गठगंधन सरकार में आगए, अब जेल की बजाय महाराष्ट सरकार में केबिनेट मंत्री है। इन नामों के अलावा सोवन चटर्जी, यामिनी जाधव और भावना गवली जैसे नेताओं पर भी जांच एजेंसी ने कोई एक्शन नहीं लिया, क्योंकि सभी बीजेपी या उनके सहयोगी पार्टी में चले गए।

सबसे बडा झटका तो हमको तब लगा जब वरिष्ठ अधिवक्ता मीनाक्षी लेखी जो भाजपा की सदस्य हैं और लोकसभा सांसद हैं उन्होंने लोकसभा में बोलते हुए किसी विपक्षी सांसद को डांटते हुए कहा था कि शांत रहो कहीं तुम्हारे घर ईडी ना आजाए ।
इसलिए स्व प्रेरित संज्ञान लिया जाकर ईडी, सीबीआई व आयकर विभाग के अधिकारियों को नोटिस जारी करके पूछा जाए कि उपरोक्त प्रकरणों व इनके अलावा अन्य प्रकरणों में अब तक क्या कार्रवाई हुई है और उनमें कार्यवाही क्यों नहीं की जा रही है या कार्यवाहियां क्यों बंद की गई है तथा समस्त पत्रावलियों को तलब किया जावे और इन सभी अधिकारियों से उपरोक्त सभी मुकदमों की तथ्यात्मक रिपोर्ट शपथ पर लेने की कृपा करें ताकि जनता का विश्वास न्यायपालिका पर बना रहे। अब लोगों का विश्वास सिर्फ न्यायपालिका पर ही है।

- **या उनके सहयोगी पार्टी में चले गए।**

सबसे बडा झटका तो हमको तब लगा जब वरिष्ठ अधिवक्ता मीनाक्षी लेखी जो भाजपा की सदस्य हैं और लोकसभा सांसद हैं उन्होंने लोकसभा में बोलते हुए किसी विपक्षी सांसद को डांटते हुए कहा था कि शांत रहो कहीं तुम्हारे घर ईडी ना आजाए ।
इसलिए स्व प्रेरित संज्ञान लिया जाकर ईडी, सीबीआई व आयकर विभाग के अधिकारियों को नोटिस जारी करके पूछा जाए कि उपरोक्त प्रकरणों व इनके अलावा अन्य प्रकरणों में अब तक क्या कार्रवाई हुई है और उनमें कार्यवाही क्यों नहीं की जा रही है या कार्यवाहियां क्यों बंद की गई है तथा समस्त पत्रावलियों को तलब किया जावे और इन सभी अधिकारियों से उपरोक्त सभी मुकदमों की तथ्यात्मक रिपोर्ट शपथ पर लेने की कृपा करें ताकि जनता का विश्वास न्यायपालिका पर बना रहे। अब लोगों का विश्वास सिर्फ न्यायपालिका पर ही है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान, मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929